Sha

پدم جي خوشبو

V-21

پدم جي خوشبو

(شهدادپوري گيانچند ”پدم“ کي شرڌانجلي)

مرتب: هريش شهدادپوري

English School
12 SEP
Reference Book
LIBRARY

پدم جي پرم پوجنيه ماتا صاحب

شريمتي هيمي بائي وريلداس شهدادپوري

ڪتاب ڇپائڻ ۾ يوگدان

1. Publisher:
   Indumati (Padma) G. Shahdadpuri
2. Proof Checkhing in Arabic Sindhi
   Meena Haresh Sabhagani
3. Proof Checking in Devnagiri
   Rashmi Haresh Shahdapuri
4. Haresh T. Sabhagani
5. Sagar H. Sabhagani
6. Bhavesh H. Shahdadpuri
7. Vijay H. Shahdadpuri

پدم جي خوشبو

(شهدادپوري گيانچند 'پدم' کي شرڌانجلي)

چاپو	:	پهريون	ڪاپيون	:	500
قيمت	:	100 رپيا	سال	:	2015

چپائيندڙ © : -آنڊومتي (پدما) جي. شهدادپوري
پدم پئليس، بلاڪ اي 373/187،
ڪرلا ڪئمپ روڊ، پنج دوڪان چؤنڪ پرسان
اُلهاسنگر -4.

ڇپيندڙ : وشال انٽرپرائيزس، اُلهاسنگر -4.

Title : **Padam Ji Khushboo**
(A tribute to Shri Shahdadpuri Gianchand 'Padam')

Author : Late Shri Shahdadpuri Gianchand Varialdas "Padam"

Collection : Shri Haresh Shahdadpuri

Edition : 1st Year - 2015

Copies : 500

Price : Rs. 100

Authors Address : 'Padam Palace', Block A 187 / 373, Kurla Camp Road, Near Panch Dukan Chowk, Ulhasnagar- 4. Dist.Thane (M.S.) 421 004

Copyrights : With the Author

Publisher : Indumati (Padma) G. Shahdadpuri
Padam Palace, Block A 187 / 373, Kurla
Camp Road, Near Panch Dukan Chowk,
Ulhasnagar- 4. Dist.Thane (M.S.) 421 004

Printed by : **Vishal Enterprises, Ulhasnagar - 421 004**

लेखक जे बारे में

नालो	:	श्री शहदादपुरी ग्यानचंद वरियलदास ''पदम''
लिखण जो नालो	:	ग्यान ''पदम''
जनम जी तारीख	:	०८/११/१९३७ .... ०५/०८/२०१४
पतो	:	''पदम पैलेस'', ब्लाक ए १८७/३७३, कुर्ला कॅम्प रोड, पंज दुकान चौंक जे वेझो, उल्हासनगर-४,ज़िल्हा-ठाणे, महाराष्ट्रा-४२१ ००४.
तालीमी लियाकतूं	:	एम.ए. फर्स्ट क्लास, (स्पेशल सिंधी), एम.ए. (ऐकानामिक्स, हिस्टरी), बी.एड. सेकंड क्लास, एस.टी.सी., सी.पी.एड, ए.सी.सी.ओ, एस.एम.सी., राष्ट्र भाषा परवीन, सर्टीफिकेट कोर्स मराठीअ में।
पेशो		सिंधी जो माज़ी प्रोफेसर, आर.के.टी. कॉलेज ''आर्टस ऐं कॉमर्स'' उल्हासनगर -३. डिग्री कॉलेज में सिंधी बैत पढ़ाइण जो आज़मूदो- माज़ी जूनियर ऐं आफीशीएटिंग प्रिंसीपाल हाई स्कूल ऐं जूनियर कॉलेज चालीहनि सालनि खां पढ़ाइण जो आज़मूदो।
साहित्य	:	• सिंधु अदबी संगत - उल्हासनगर जो बर्पा कंदड़ ऐं प्रेज़ीडंट हुआ १६ सालनि ताईं।

ليکڪ جي باري ۾

نالو	:	شري شهدادپوري گيانچند وريلداس ''پدم''
لکڻ جونالو	:	گيان ''پدم''
جنم جي تاريخ	:	08/11/1937 .... 05/08/2014
پتو	:	''پدم پئليس''، بلاڪ A 373/187 ڪرلا ڪئمپ روڊ، پنج دڪان چوڪ جي ويجهو اُلهاسنگر-4، ضلع-ٺاڻي، مهاراشٽرا- 421004
تعليمي لياقتون	:	ايم.اي فرسٽ ڪلاس (اسپيشل سنڌي) ايم.اي (ايڪانامڪس، هسٽري) بي.ايڊ سيڪنڊ ڪلاس، ايس.ٽي.سي، سي.پي.ايڊ، اي.سي.سي.او، ايس.ايم.سي.، راشٽر ڀاشا پروين- سرٽيفڪيٽ ڪورس مراٺيءَ ۾
پيشو	:	سنڌيءَ جو ماضي پروفيسر، آر.ڪي.ٽي ڪاليج 'آرٽس ۽ ڪامرس' اُلهاسنگر -٣. ڊگري ڪاليج ۾ سنڌي ٻيت پڙهائڻ جو آزمودو- ماضي جونيئر ۽ آفيشيئٽنگ پرنسيپال هاءِ اسڪول ۽ جونيئر ڪاليج چاليهن سالن جو پڙهائڻ جو آزمودو.
ساهتيه	:	• سنڌو ادبي سنگت- اُلهاسنگر، جو ٻرپا ڪندڙ ۽ پريزيڊنٽ هئا ١٦ سالن تائين.

- लेखक ऐं शाइर (सिंधी, हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू)
- सिंधु अदबी सभा जो बर्पा कंदड़ ऐं प्रेज़ीडन्ट बिनि सालनि लाइ।
- सिंधी साहित्य अकडामी उल्हासनगर जा बर्पा कंदड़ ऐं वाईस प्रेज़ीडन्ट हुआ १० सालनि ताईं।
- सिंधी, अंग्रेजी ऐं हिन्दी में केतिरयूं ई कविताऊँ, ग़ज़लूं, लेख-मज़मून लिखिया जेकी रोज़ ऐं हफ्तेवार निकरदंड़ अखबारूनि ऐं मैग़ज़ीन में छपिया विया। हिन साहिब सिंधी में हिकु कविताऊनि जो किताब पिणु लिखियो।
- मकानी ऐं अखिल भारत सितह ते सिंधी ऐं हिन्दी मुशाइरनि में शिरकत कई।
- मकानी ऐं अखिल भारत सितह ते केतरनि ई सिंधी ऐं हिंदी सम्मेलनि ऐं सेमीनारनि ऐं मेड़नि में पिणु शिरकत कई, पेपर पिणु पढ़िया।
- दूर दर्शन ऐं आल इन्डिया रेडियो मुंबई तां प्रसारित कयल सिंधी मुशाइरनि में बहिरो वरितो हो।
- अंतरराष्ट्रीय फोर्म जा यारहां साल वर्किंग सेक्रेटरी थी रहिया। (उल्हासनगर ब्रांच)
- पंजवीह साल पत्रकार हुआ ऐं ब दफा मीडिया कान्फ्रंस में शिरकत कई।
- ब्रह्मकुमारीज़ आश्रम माऊंट अबू (राजस्थान) में सप्टेम्बर २००८ में विया हुआ जिते खेनि लेकचरार तोर इनामु ऐं सर्टीफिकेट दिनो वियो।

इनाम, इकरार : १० ग्रामनि जो सोनो बिलो ठाणे जिल्हा टीचरस

• ليکڪ ۽ شاعر (سنڌي، هندي، انگريزي ۽ اُردو)

• سنڌي ادبي سڀا جو برپا ڪندڙ ۽ پريزيڊنٽ پن سالن لاءِ

• سنڌي ساهتيہ اڪاڊمي اُلهاسنگر جا برپا ڪندڙ ۽ وائيس پريزيڊنٽ هئا ١٠ سالن تائين.

• سنڌي، انگريزي ۽ هنديءَ ۾ ڪيترين ئي ڪويتائون، غزلون، ليکہ مضمون لکيا جيڪي روز ۽ هفتيوار نڪرندڙ اخبارون ۽ مئگزن ۾ ڇپيا ويا. هن صاحب سنڌيءَ ۾ هڪ ڪويتائن جو ڪتاب پڻ لکيو.

• مڪاني ۽ اکل ڀارت سطح تي سنڌي ۽ هندي مشاعرن ۾ شرڪت ڪئي.

• مڪاني ۽ اکل ڀارت سطح تي ڪيترن ئي سنڌي ۽ هندي سميلنن، سيمينارن ۽ ميڙن ۾ پڻ شرڪت ڪئي، پيپر پڻ پڙهيا.

• دوردرشن ۽ آل انڊيا ريڊيو ممبئي تان پرسارت ڪيل سنڌي مشاعرن ۾ بهرو ورتو هو.

• انترراشٽريہ فورم جا ڀارهان سال ورڪنگ سيڪريٽري ٿي رهيا.
(اُلهاسنگر برانچ)

• پنجويهہ سال پترڪار هئا ۽ ٻہ دفعا ميڊيا ڪانفرنس ۾ شرڪت ڪئي.

• برهم ڪماري آشرم ۾ مائونٽ آبو (راجستان) ۾ سيپٽمبر 2008 ۾ ويا هئا جتي کين ليڪچرار طور اِنعام ۽سرٽفڪيٽ ڏنو ويو.

اِنعام، اقرار : ڏهن گرامن جو سونو ٻلو ٺاڻي ضلع ٽيچرس

ऐं सन्मान ट्राफयूं ऐं सर्टीफिकेट	:	फोरम द्वारां दिनो वियो. लाईफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड डिसंबर २००७ • जीअ सिंधी सभा पारां हिन साहिब खे बहितरीन शाइर जो इनामु दिनो वियो ऐं रोक ११००/- रूपया।
सोन ऐं चांदी जा बिला पिणु मिलिया	:	माता मजनी बाई सत्कार समितीअ पारां हिन साहिब खे १९८७ में पढ़ाई ऐं साहित्य जे खेत्र में सेवाउनि लाइ चांदीअ जो बिलो दिनो वियो। तैलीमी खेत्र में सेवाउनि लाइ राज्य मंत्री श्री प्रताप राव भोंसलें हिन साहिब खे १९७९ में सरकारी इनामु दिनो।
स्पेशल लाईफ अचीवमेंट अवार्ड	:	उल्हासनगर महानगर शिक्षक परिषद जे पारां हिन साहिब खे २८.९.२००८ ते लाइफ टाईम अचीवमेंट अवार्ड दिनो वियो। बियनि केतिरियुनि ई संस्थाउनि हिन जी एडमन्सट्रेशन, तालीमी, साहितक, समाजिक ऐं पत्रिका खेत्र में कयल सेवाउनि लाइ हिनजी साराह कई वई ऐं खेनि सन्मान दिनो वियो।
जहिड़ोकि	:	१. रोटरी क्लब आफ उल्हासनगर (अंतरराष्ट्रीय) २. रोटरी मिड टाऊन क्लब। ३. लाइन्स क्लब उल्हासनगर (ब दफा) ४. मिड टाऊन सीनियर सिटीजन्स क्लब, उल्हासनगर १२.०४.२००८। ५. सिंधु समाज पैंचायत, उल्हासनगर- हिन साहिब जो ब दफा सन्मान कयो वियो. हीउ साहिब उन संस्था जा ४५ सालनि ताईं सेक्रटरी थी रहिया ऐं आखिर में स्वुर्गवासु थियण खां साल अगु में उन संस्था जा प्रेज़ीडन्ट थी रहिया।

۽ سنمان ٽرافيون : فورم پاران ڏنو ويو. لائيف ٽائيم
۽ سرٽيفڪيٽ : اچيومينٽ اوارڊ ڊسمبر 2007.

•جيئي سنڌي سڀا پاران هن صاحب کي بهترين شاعر جو اِنعام ڏنو ويو ۽ روڪ -/1100 رپيا.

سون ۽ چاندي : ماما مکڻي بائي سنگار سمتيءَ پاران هن
جا ٻلا پڻ مليا : صاحب کي 1987 ۾ پڙهائي ۽ ساهت جي کيتر ۾ سيوائن لاءِ چانديءَ جو ٻلو ڏنو ويو.

: تعليمي کيتر ۾ سيوائن لاءِ راجيه منتري شري پرتاپ راو پونسلي هن صاحب کي 1979 ۾ سرڪاري اِنعام ڏنو.

اسپيشل لائيف : اُلهاسنگر مهانگر شکشڪ پريشد جي پاران
اچيومينٽ اوارڊ : هن صاحب کي 28.9.2008 تي لائيف ٽائيم اچيومينٽ اوارڊ ڏنو ويو.

: ٻين به کيترين ئي سنسٿائن هنجي ائڊمنسٽريشن، تعليمي، ساهتڪ، سماجڪ ۽ پترڪاريڪا کيتر ۾ ڪيل سيوائن لاءِ هنجي ساراهه ڪئي ويئي ۽ کين سنمان ڏنو ويو.

جهڙوڪ : ۱. روٽري ڪلب آف اُلهاسنگر (انٽر راشٽريه)

۲. روٽري مڊ ٽائون ڪلب

۳. لائنس ڪلب اُلهاسنگر (ٻه دفعا)

۴. مڊٽائون سينيئر سٽيزنس ڪلب، اُلهاسنگر 12.04.2008.

۵. سنڌو سماج پئنچات، اُلهاسنگر 4 هن صاحب جو ٻه دفعا سنمان ڪيو. هي صاحب اُن سنستا جا 45سالن ٽائين سيڪريٽري تي رهيا ۽ آخر ۾ سرڳواس ٿيڻ کان سال اڳ اُن سنستا جا پريزيڊنٽ تي رهيا.

कुझु प्यार भरियूं यादूं, कुझु वीचार

श्री ज्ञानचंद शहदादपुरी ''पदम'' जे बारे मे जेको मुंहिंजो प्यारो जग खां न्यारो, मंहिंजो मनठार, मंहिंजो भतार, जंहिंखे प्यार सां मां ''साईं'' चवंदी हुयसि, ऐं माण्हू उन खे प्यार सां ''पदम'' करे कोठींदा हुआ। छो त पदमा मुंहिंजो नालो आहे ऐं मूंसां बेहद प्यार हुअण सबबि पंहिंजो तख़लसु ई रखियाई ''पदम'' ऐं असांजे बंगले जो नालो पिणु रखियाईं ''पदम पैलेस''।

इन्सान खे दुनियवी पर्दाथनि मां सुख त मिलनि था पर अंदर जो आनंद मन जी सचाईअ मां थो मिले। अहिड़ो ई इन्सान हो मुंहिंजो ''साईं''जंहिं में निउड़त निमाणाई, बियनि जे लाइ हमदर्दीअ जो अहिसासु ऐं पंहिंजे कम लाइ लग्न हुई। हू आला शख़्सियत जो मालिकु हो। पर हुन जो सुभाउ अंदर तोड़े बाहिर हिक जहिड़ो हो। साईंअ जो मनु शिफ़ाफु आईने मिसल साफु सुथिरो हो. साईं हिकु सुठो इन्सानु ऐं बेहद होशियार शाइर हो। जंहिंजी शाइरीअ में वज़न बिल्कुल तुज़ु नज़र ईंदो हो। ऐदियूं त सुठियूं वज़नदार शाइरीयूं लिखंदो कदंहिं बि कोबि हिन जी शाइरीअ ते गलत नुक्तचीनी न कंदो हो। हिन जी शाइरी इंद्रधनुष जे सतनि रंगनि जियां दिलिकश ऐं रंगीन आहे। कला कंहिं खे वरसे में मिलंदी आहे। किनि खे कुदरती दात हूंदी आहे। कंहिं सच ई चयो आहे त ''दाति न पुछे ज़ाति जो वहे सो लहे।''

साईअ जो जहिड़ो नालो हू ''ज्ञान'' तहिड़ो ई हू ज्ञानवान। हिन पंहिंजे नाले जी इज्ज़त हमेशह बरकरार रखी। कदंहिं बि को बि इन्सान का बि उम्मीद या अर्ज़ु को कमु खणी ईंदो होसि त हू कदंहिं बि उन खे ना उम्मीद न कंदो हो। न दींहु दिसंदो हो न राति जेसताईं

ٻہ اَکر

ڪجھ پيار ڀريون يادون ڪجھ
ويچار - شري گيانچند شھدادپوري ’پدم‘
جي باري ۾ جيڪو منھنجو پيارو جڳہ کان
نيارو منھنجو منئار منھنجو ڀتار. جنھن
کي پيار سان مان سائين چوندي ھئس ۽
ماڻھون ان کي پيار سان ’پدم‘ ڪري
ڪوٺيندا ھئا ڇو تہ پدما منھنجو نالو آھي
۽ مون سان بيحد پيار ھئڻ سبب پنھنجو
تخلص ئي رکيائين ڪٿي ’پدم‘ ۽ اَسانجي
بنگلي جو نالو پڻ رکيائين ’پدم پئليس‘

اِنسان کي دنيوي پدارٿن مان سک تہ ملن ٿا، پر اندر جو آنند من جي سچائيءَ مان ئي ملي. اَھڙو ئي اِنسان ھو منھنجو سائين جنھن ۾ نئڙت، نماڻائي، ٻين لاءِ ھمدرديءَ جو احساس ۽ پنھنجي ڪم لاءِ لگن ھئي. ھوُ اعليٰ شخصيت جو مالڪ ھو. پر ھُن جو سياءُ اندر توڙي ٻاھر ھڪ جھڙو ھو. سائينءَ جو من شفاف آئيني مثل صاف سٿرو ھو. سائين ھڪ سنو اِنسان ۽ بيحد ھوشيار شاعر ھو، جنھن جي شاعريءَ ۾ وزن بلڪل تز نظر ايندو ھو، ايڏيون تہ سنيون وزندار شاعريون لکندو ھو جو ڪڏھن بہ ڪوبہ ھنجي شاعريءَ تي ڪا غلط نقطچيني نہ ڪندو ھو. ھن جي شاعري اندرڌنش جي ستن رنگن جيان دلڪش ۽ رنگين آھي. ڪلا ڪنھن کي ورثي ۾ ملندي آھي. ڪن کي قدرتي ذات ھوندي آھي. ڪنھن سچ ئي چيو آھي تہ، ’’ذات نہ پڇي ذات، جو وھي سو لھي.‘‘

سائينءَ جو جھڙو نالو ھو ’گيان‘ تھڙو ئي ھو گيانوان. ھن پنھنجي نالي جي عزت ھميشھ برقرار رکي. ڪڏھن بہ ڪوبہ انسان ڪا بہ اُميد يا عرض کو ڪم ڪٿي ايندو ھوس تہ ھوُ ڪڏھن بہ ان کي نااُميد نہ ڪندو ھو نہ ڏينھن ڏسندو ھو نہ رات جيسنائين اُن جو

उन जो कमु पूरो न थिए तेसताईं उन जे कम में जुटो रहंदो हो। ईश्वर जी कृपा सां कानून जी जाण बि सुठी हुयसि। हूअं त ''आर्टस'' (Arts) जो मास्तर (Master) हो, पर हिन खे जाण साईंस ऐं कार्मस जी बि सुठी हुई। टिन्ही फैक्लटीज़ (Faculties) में पंहिंजो मटु पाण हो।

''माण्हू मिड़ेई न माण्हू
पखी मिड़ेई न हंज,
कंहिं कंहिं माण्हू मंज
अचे बुंइ बहार जी''

इहा चवणी बेहद प्राचीन आहे । पर मुंखे फ़खुर आहे त इहा चवणी साईंअ सा बिल्कुल मेल खाईंदड़ हुई। जींअं कमल जो गुल कीचड़ में रहंदे बि हमेशह बहकंदो रहंदो आहे ऐं टाड़ीअ जो साथु छुटण खां पोइ बि या त भगवान जे चरणनि में अर्पण कयो वेंदो आहे या अतुर रूपी खुशबूअ सां महकंदो रहंदो आहे तींअं मुंहिंजो साईं पिणु जेसताईं हिन संसार रूपी शाख सां जुड़ियल हो तेसताईं बहकंदो रहियो ऐं जदहिं संसार ऐं शरीर खां मुक्त थियो त पंहिंजे शाइरयुनि रस्ते हिन खुशबूअ में महकंदो रहंदो।

हिन दुनिया रूपी गुलस्तान में कंहिं न कंहिं वक्त अहिड़ा गुल पैदा थियनि था जेके पंहिंजी खुशबूअ (सुगंध) चौतरफ फहिलाईंदा था रहनि। अहिड़नि गुलनि मंझां हिकु गुलाबी गुल हो सदा हयात ज्ञानचंद शहदादपुरी ''पदम''इहाई मुंहिंजे प्राणनि खां प्यारे पतीअ खे कुर्ब भरी श्रद्धांजली आहे।

''पदम जी खुशबू''

इंदूमती (पदमा) शहदादपुरी ''पदम''

[library stamp]

ڪم پورو نہ ٿئي تيستائين اُن جي ڪم ۾ جٽيو رهندو هو. ايشور جي ڪرپا سان قانون جي ڄاڻ بہ ڏاڍي سٺي هئس. هونئن تہ Arts جو Masters هو پر هن کي ڄاڻ سائنس ۽ ڪامرس جي بہ ڏاڍي سٺي هئي. ٽنهي Faculties ۾ پنهنجو مٽ پاڻ هو.

”ماڻهون مڙيئي نہ ماڻهون؛
ڪي مڙيئي نہ هنج،
ڪنهن ڪنهن ماڻهون منجهہ،
اَچي بوءِ بهار جي.“

اِها چوڻي بيحد پراچين آهي.پر مونکي فخر آهي تہ اِها چوڻي سائينءَ سان بلڪل ميل ڪائيندڙ هئي. جيئن ڪمل جو گل ڪيچڙ ۾ رهندي بہ هميشهہ ٽهڪندو رهندو آهي ۽ ٽاڙيءَ جو ساٿ ڇڏڻ کان پوءِ بہ يان تہ ڀڳوان جي چرنن ۾ ارپڻ ڪيو ويندو آهي يا عطر روپي خوشبوءِ سان مهڪندو رهندو آهي، تيئن منهنجو سائين پڻ جيستائين هن سنسار روپي شاخ سان جڙيل هو تيستائين ٽهڪندو رهيو ۽ جڏهن هن سنسار ۽ سرير کان مُڪت ٿيو تہ پنهنجي شاعرين رستي هن خوشبوءَ ۾ مهڪندو رهندو.

هن دنيا روپي گلستان ۾ ڪنهن نہ ڪنهن وقت اهڙا گل پيدا ٿين ٿا جيڪي پنهنجي خوشبوءِ (سُگنڌ) چؤطرف ڦهلائيندا ٿا رهن. اَهڙن گُلن منجهان هڪڙو گُلابي گُل هو. سداحيات گيانچند شهدادپوري ’پدم‘ اِهائي منهنجي پراڻن کان پياري پتيءَ کي منهنجي قرب ڀري شرڌانجلي آهي.

”پدم جي خوشبو“

اِندومتي(پدما) شهدادپوري ”پدم“

सुफ़्हो	صفحو	
(२४) यादूं	31	(۲۴) يادون
(२५) ग़ज़ल	31	(۲۵) غزل
(२६) मछर	33	(۲٦) مڇر
(२७) ग़ज़ल	35	(۲۷) غزل
(२८) ग़ज़ल	35	(۲۸) غزل
(२९) ग़ज़ल	37	(۲۹) غزل
(३०) ग़ज़ल	37	(۳۰) غزل
(३१) ग़ज़ल	39	(۳۱) غزل
(३२) मज़ाकी गज़ल	39	(۳۲) مذاقي غزل
(३३) ग़ज़ल	41	(۳۳) غزل
(३४) ग़ज़ल	43	(۳۴) غزل
(३५) हिदायतूं	45	(۳۵) هدايتون
(३६) ग़ज़ल	47	(۳٦) غزل
(३७) सिपाही भारत जा	49	(۳۷) سپاهي ڀارت جا
(३८) ग़ज़ल	51	(۳۸) غزل
(३९) ग़ज़ल	51	(۳۹) غزل
(४०) ग़ज़ल	53	(۴۰) غزل
(४१) ग़ज़ल	55	(۴۱) غزل
(४२) ग़ज़ल	57	(۴۲) غزل
(४३) ग़ज़ल	59	(۴۳) غزل
(४४) ग़ज़ल	59	(۴۴) غزل
(४५) ग़ज़ल	61	(۴۵) غزل
(४६) ग़ज़ल	61	(۴٦) غزل
(४७) ग़ज़ल	63	(۴۷) غزل
(४८) ग़ज़ल	63	(۴۸) غزل
(४९) साथी	65	(۴۹) ساٿي
(५०) रिश्वत	67	(۵۰) رشوت
(५१) शहीदनि जी याद	67	(۵۱) شهيدن جي ياد

* फहिरस्त *   *فهرست*

	सुफ़्हो	صفحو	
(०) लेखक जे बारे में	I		(•) ليکڪ جي باري ۾
(०) ब अखर	IV		(•) ٻه اکر
(१) ग़ज़ल	1		(١) غزل
(२) लिकी लिकी	3		(٢) لڪي لڪي
(३) ग़ज़ल	3		(٣) غزل
(४) ग़ज़ल	5		(٤) غزل
(५) ग़ज़ल	5		(٥) غزل
(६) ग़ज़ल	7		(٦) غزل
(७) ग़ज़ल	7		(٧) غزل
(८) ग़ज़ल	9		(٨) غزل
(९) मुंहिंजा मन कबूतर	11		(٩) منهنجا من ڪبوتر
(१०) ग़ज़ल	13		(١٠) غزل
(११) ग़ज़ल	15		(١١) غزل
(१२) ग़ज़ल	15		(١٢) غزل
(१३) ग़ज़ल	17		(١٣) غزل
(१४) ग़ज़ल	17		(١٤) غزل
(१५) ग़ज़ल	19		(١٥) غزل
(१६) ग़ज़ल	19		(١٦) غزل
(१७) ग़ज़ल	21		(١٧) غزل
(१८) ग़ज़ल	23		(١٨) غزل
(१९) ग़ज़ल	23		(١٩) غزل
(२०) ग़ज़ल	25		(٢٠) غزل
(२१) ग़ज़ल	25		(٢١) غزل
(२२) ग़ज़ल	27		(٢٢) غزل
(२३) बाहि बिरह जी	29		(٢٣) باهه برهه جي

سنتن جي آسيس

پنهنجي وقت جا ستارا

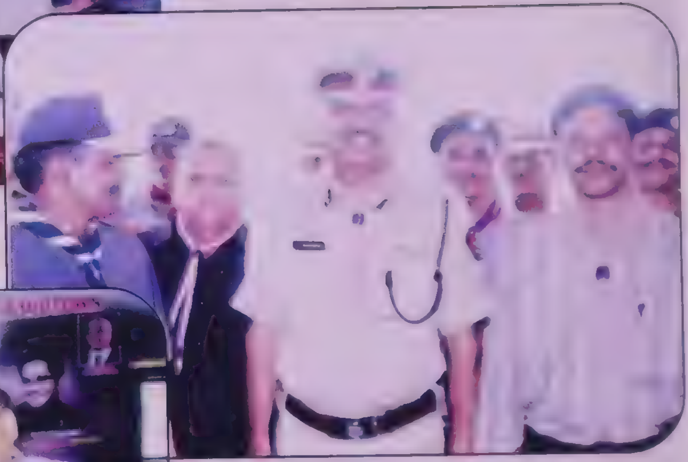

ڪاڄهه موجون مستيون

پنهنجي وقت جا ستارا

پنهنجي وقت جا ستارا

پنهنجي وقت جا ستارا

پنهنجي وقت جا ستارا

پنهنجي وقت جا ستارا

NEVER

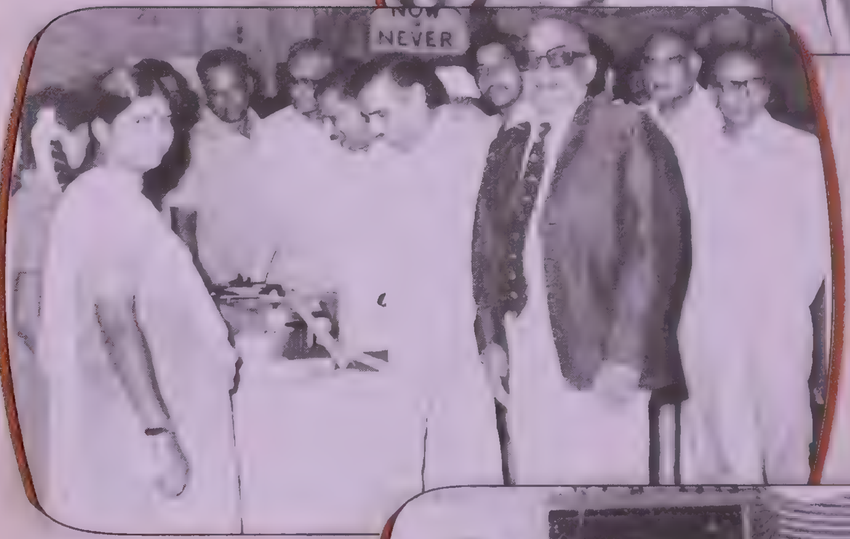
NEVER

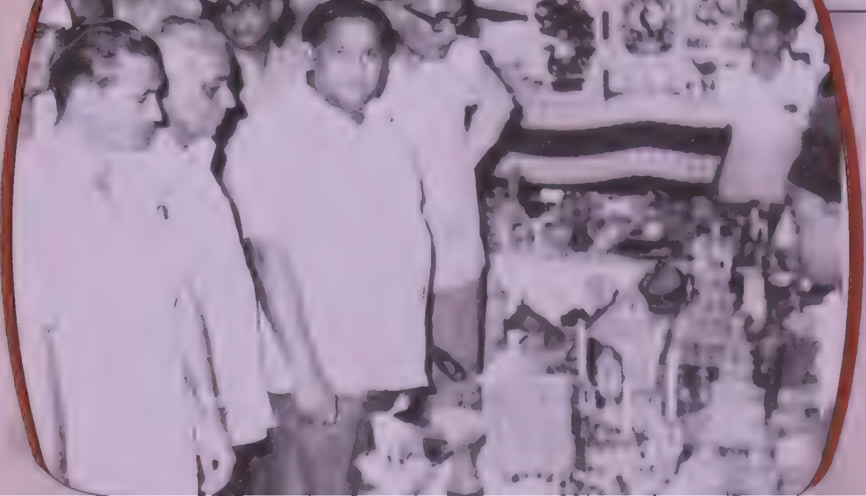

گيانچند شهدادپوري

”پدم“جي

شاعرانہ محفل ۾

توهان جو سواگت آهي.

ग्यानचंद शहदादपुरी

“पदम” जी

शाइराना महिफ़ल

में तव्हांजो स्वागत आहे

ग़ज़ल

१. हररोज़ मरूँ था, हररोज़ जीऊँ था,
हर हिक सुख जो मुल्हु, हिते ई भरियूँ था.

२. को दंद पियो शीके, को करे पियो चप चिबा,
ग़मु खाई सभिन खे, भाकुर में भरियूं था.

३. न बिल्ली मारियूँ कंहिंजी, न अटो खाऊँ,
पोइ बि अगियाँ कंहिंजे, गोदा खोड़ियूं था.

४. जीवन में को कंहिंखे, समिझी सघे शल,
न त त मुफ़्त में पिया, पाणी विलोड़ियूं था.

५. दाढो दुखियो थी पियो आ, जहान में जीअणु,
हरको सेर मथां, सवा सेर दिसूं था.

६. काइदो न कानून, सस्तो सहिंजो आहे,
बिए मथां शैतान जी, लठि जा बि सहूं था.

७. छदु "पदम" इहे गाल्हियूं हक़ माणण जूं,
कुचलजंदो हक़ खे, घणनि हंधि पसूं था.

❖❖❖

غزل

١. هرروز مرون ٿا، هرروز جيئون ٿا،
هر هڪ سڪ جو ملھ هتي ئي ڀريون ٿا.

٢. ڪو ڏند پيو شيڪي، ڪو ڪري پيو چپ چبا،
غم ڪائي سين ڪي، ڀاڪر ۾ ڀريون ٿا.

٣. نہ ٻلي ماريون ڪنھن جي، نہ اَٽو ڪائون،
پوءِ بہ اَڳيان ڪنھن جي، گوڏا ڪوريون ٿا.

٤. جيون ۾ ڪو ڪنھن ڪي، سمجھي سگھي شل،
نہ تہ تہ مفت ۾ پيا، پاڻي ولوڙيون ٿا.

٥. ڏاڍو ڏکيو ٿي پيو آ، جھان ۾ جيئڻ،
هرڪو سيرِ مٿان، سوا سير ڏسون ٿا.

٦. قاعدو نہ قانون، سستو سنھنجو آهي،
ٻئي مٿان شيطان جي، لٺ جا بہ سھون ٿا.

٧. چڱ ”پدم“ اِهي ڳالھيون حق ماڻڻ جون،
ڪچلجندو حق ڪي، گھٽن هنڌ پسون ٿا.

❖❖❖

लिकी लिकी

१. वसी बरसात नेणनि मां लिकी लिकी,
भजनि घुंघुरू बि पेरनि मां लिकी लिकी।

२. ज़मानो आ ज़ुल्म ऐं ज़ोर ज़्बर जो,
उदामनि नोट खीसनि मां लिकी लिकी।

३. विकामे छा न थो अजु हिन जहान में,
कमाइनि नाणो जिस्मनि मां लिकी लिकी।

४. जले थो छो ज़मानो, आशिकनि ते अजु,
टिड़े थो इश्क अशिकनि मां लिकी लिकी।

५. "पदम" दिसु हालु अजु हर आदितीअ जो,
कढे पैसा भंडारनि मां लिकी लिकी।

❖❖❖

ग़ज़ल

१. अज़ीज़नि करीबनि आ मारे छदियो मूं,
विहां जिनि जे विच में , किनारे कयो मूं।

२. व़फा जिनि जी पंहिंजी , मूं समिझी सदाईं,
ख़ुदा जाणे छो, बेवफा तिनि सदियो मूं।

३. पीअनि गदु ऐं खाइनि, महिफलुनि में जेकी,
धिकारे पिए दिल सां, आ धकु ई हंयो मूं।

४. विहनि गोदा खोड़े , जे गोदा मिलाये।
मिलनि तिनि न नज़रूं, मुंझाइनि अचयो मूं।

५. "पदम" वक्तु ईंदो, सुञाणींदो सभ खे,
तदंहि हरको पुछंदो, हो केदो लुछियो मूं।

❖❖❖

لِڪيِ لِڪيِ

١. وسي برسات نيڻن مان لِڪيِ لِڪيِ،
پڇن گهنگهرو ٻه پيرن مان لِڪيِ لِڪيِ.

٢. زمانو آ ظلم ۽ زور زبر جو،
اُڏامن نوٽ ڪيسن مان لِڪيِ لِڪيِ.

٣. وڪامي چا نٿو اَڄ هن جهان ۾،
ڪمائن ناڻو جسمن مان لِڪيِ لِڪيِ.

٤. جلي ٿو چو زمانو عاشقن تي اَڄ،
نٽڙي ٿو عشق اشڪن مان لِڪيِ لِڪيِ.

٥. ”پدم“ ڏس حال اڄ هر عادتيءَ جو،
ڪڍي پئسا پندارن مان لِڪيِ لِڪيِ.

❖❖❖

غزل

١. عزيزن قريبن آ ماري ڇڏيو مون،
وهان جن جي وچ ۾، ڪناري ڪيو مون.

٢. وفا جن جي پنهنجي، مون سمجهي سدائين،
خدا ڄاڻي ڇو، بيوفا تن سڏيو مون.

٣. پيئن گڏ ۽ کائن، محفلن ۾ جيڪي،
ڌڪاري پي دل سان، آ ڏک ئي هنيو مون.

٤. وهن گوڙا ڪوڙي، جي گوڙا ملائي،
ملن تن نه نظرون، منجهائن آڇيو مون.

٥. ”پدم“ وقت ايندو، سڃاڻيندو سڀ ڪي،
تڏهن هرڪو پڇندو، هو ڪيڏو لڇيو مون.

❖❖❖

ग़ज़ल

१. दाढाई दाढनि जी, दाढी गरी लगी,
कुदरत जी न कदंहि का , अहिड़ी छड़ी लगी

२. अ़ल्हयूं माशुकनि जूं, आशिकनि खां न पुछु,
राति जहिड़ी लैला , मज़नू खे परी लगी।

३. कदंहि त उथंदो आवाज़, ज़ुल्म खिलाफ़ भी,
दिसंदो ज़ाल्मि भी , उन खे हथिकड़ी लगी।

४. फलु महिनत जो ऐदो पियो थो लगे मिठो ,
हासुल कयल ज़री पिणु, हीरनि जड़ी लगी।

५. उमिर विञायमि "पदम" अजाई अयाणनि सां,
सियाणनि जो संगु वारे, मिठी हर घड़ी लगी।

❖❖❖

ग़ज़ल

१. पंजनि सालनि जी उमिर में पढ़हण वञां थो,
काम्याबीअ जी दाकणि ममी चढ़हण वञां थो।

२. दिसु त किताब बि केतिरा गोरा मिलिया आहिनि,
बुक ऐं वर्कबुक मिड़ियो ई वठण वञां थो।

३. आहे बे माड़े ते स्कूल असांजो,
दाकणि बि चढ़ही, कमर पकी, करण वञां थो।

४. मैडम अंग्रेजीअ में गिट मिट कंदी आ,
बुधण सां सूर मथे में विझण वञां थो।

५. समिझंदुसि न त "पदम" पोइ काबिल कीअं थींदुसि,
छदि मूंखें मां मैडम खां पुछण वञां थो।

❖❖❖

غزل

۱. ڏاڏائي ڏاڏن جي ڏاڏي ڳري لڳي،
قدرت جي نہ ڪڏهن ڪا، اَهڙي ڇڙي لڳي.

۲. الهيون معشوقن جون، عاشقن ڪان نہ پُڇ،
رات جهڙي ليليٰ ، مجنو کي پري لڳي .

۳. ڪڏهن تہ اُٿندو آواز، ظلم خلاف يي،
ڏسندو ظالم يي، اُن کي هٿڪڙي لڳي.

۴. ڦل محنت جو ايڏو، پيو تو لڳي منو،
حاصل ڪيل ذري پڻ، هيرن جڙي لڳي.

۵. عمر وڃايم ”پدم“ اَجائي اَياڻن سان،
سياڻن جو سنگ واري، مني هر گهڙي لڳي.

❖❖❖

غزل

۱. پنجن سالن جي عمر ۾ پڙهڻ وڃانئو،
ڪاميابيءَ جي ڏاڪڻ ممي چڙهڻ وڃانئو.

۲. ڏس تہ ڪتاب بہ ڪيڏا ڳوُرا مليا آهن،
بوڪ ۽ ورڪ-بوڪ مڙيو ئي وٺڻ وڃانئو.

۳. آهي بي ماڙي تي اسڪول اَسانجو،
ڏاڪڻ بہ چڙهي ڪمر پڪي، ڪرڻ وڃانئو.

۴. مئڊم اَنگريزيءَ ۾ کِٽ مِٽ ڪندي آ،
ٻڌڻ سان سور مٿي ۾ وجهڻ وڃانئو.

۵. سمجهندس نہ تہ ”پدم“ پوءَ قابل ڪيئن تيندس،
ڇڏ مونکي مان مئڊم ڪان پڇڻ وڃانئو.

❖❖❖

ग़ज़ल

१. कंहिं सां मुंहिंजो साढु न आहे,
दुश्मनीअ जो वहिंवार न आहे।

२. क़ाम्याबीअ जी राह आ हिकिड़ी,
कंहिं लाइ मूं वटि ज॒ार न आहे।

३. जंहिं चाही का शेवा मूंखां,
कद॒ंहि कयो इन्कार न आहे।

४. जेको बि घिड़ी आयो घर में,
मूं ते कद॒ंहि को बार न आहे।

५. कर्मु ई करणो आहे पंहिंजो,
कम खां मूंखे आर न आहे।

६, कम पेई करे जो आनाकानी,
कंहिं जो "पदम" सो यारि न आहे।

❖❖❖

ग़ज़ल

मज़ो मुहब्बत जो, वठण द॒े मूंखें,
अंदाज़ु उल्फत जो, लहणु द॒े मूंखें।
शमा जे सितम खां , वाकिफु न आहियां,
परवाने जियां अजु, जलणु द॒े मूंखें।
"अशिक अख़ियुनि पिया उखड़ंदा रहंदा";
पैमाने जियां, छलकणि द॒े मूंखें।
बिना द॒ियण जे कुछु, मिलियो कंहिंखे आहे?
दीवाने जियां अजु, मरणु द॒े मूंखें।
कंहिं वटियो आ भला, अजु बि इश्क मां "पदम";
आशिकनि विच में ई , रहणु द॒े मूंखें।

❖❖❖

غزل

١. ڪنهن سان منهنجو ساڃ نہ آهي،
دشمني جو وهنوار نہ آهي.

٢. ڪاميابيءَ جي راهہ آ هڪڙي،
ڪنهن لاءِ مون وٽ چار نہ آهي.

٣. جنهن چاهي ڪا شيوا مونکان،
ڪڏهن ڪيو انڪار نہ آهي.

٤. جيڪو بہ گهري آيو گهر ۾،
مونتي ڪڏهن ڪو بار نہ آهي.

٥. ڪرم ئي ڪرڻو آهي پنهنجو
ڪم ڪان مونکي آر نہ آهي.

٦. ڪم پئي ڪري جو آنا ڪاني،
ڪنهن جو ”پدم“ سِو يار نہ آهي.

❖❖❖

غزل

مزو محبت جو، وٺڻ ڏي مونکي،
انداز اُلفت جو، لهڻ ڏي مونکي.

شمع جي ستم کان، واقف نہ آهيان،
پرواني جيان اڄ جلڻ ڏي مونکي.

”اَشڪ اَکين پيا اڪڙندا رهندا؛“
پئماني جيان ڇلڪڻ ڏي مونکي.

بنان ڏيڻ جي ڪجھ، مليو ڪنهن کي آهي ؟
ديواني جيان، اڄ مرڻ ڏي مونکي.

ڪنهن وٺيو آ پلا اڄ، بہ عشق مان ”پدم“؛
عاشقن وچ۾ ئي، رهڻ ڏي مونکي

❖❖❖

ग़ज़ल

१. दिलि खे दिलि सां, मिलाये त दिसु,
कंहिं खे खुद में, समाए त दिसु।

२. सितारनि जियां, दिलबर मुंहिंजी दिलि जा,
ऊंदहि में जोति, जगाए त दिसु।

३. शमा त पतंग, जी जान आ,
पतंग जियां जानु, जलाए त दिसु।

४. करे याद माज़ी, छो हाल खे बिगाड़ीं?
स्तिमु जो सठुए, भुलाए त दिसु।

५. साथी त सुखनि जो, सभिको ई आहे,
दु:खनि सां यारी, निभाए त दिसु।

६. सहिंरो नफरत जो, बधी पियो घुमीं,
मुहब्बत जी दूहीं , दुखाए त दिसु।

७. पाणु मल्हाए , पियो पाणु मल्हाईं,
बियनि खे बि कदंहि पदाए त दिसु।

८. सदा पियो गुजारीं, फिकुर व सोच में,
गीत ख़ुशीअ जो, गुनगनाए त दिसु।

९. इश्क जी करीं पियो, सदा आरज़ू
आशिक जियां अशिक, पचाए त दिसु।

१० खुशबुइ गुलाब जी, पाइणु थो चाहीं,
कंडनि सां "पदम", रसाए त दिसु।

❖❖❖

غزل

١. دل کي دل سان، ملائي تہ ڏس،
ڪنهن کي خود ۾، سمائي تہ ڏس.

٢. ستارن جيان، دلبر منهنجي دل جا،
اوندهہ ۾ جوت، جڳائي تہ ڏس.

٣. شمع تہ پتنگ، جي جان آ،
پتنگ جيان جان، جلائي تہ ڏس.

٤. ڪري ياد ماضي، چو حال کي بگاڙين؟
ستم جو سنئہ، پلائي تہ ڏس.

٥. ساٿي تہ سکن جو،سيکو ئي آهي؛
دکن سان ياري، نڀائي تہ ڏس.

٦. سهرو نفرت جو، ٻڌي پيو گهمين،
محبت جي دونهين ، دکائي تہ ڏس.

٧. پاڻ ملهائي، پيو پاڻ ملهائين،
ٻين کي بہ ڪڏهن، پڏائي تہ ڏس.

٨. سدا پيو گذارين، فکر و سوچ ۾؛
گيت خوشيءَ جو، گنگنائي تہ ڏس.

٩. عشق جي کرين پيو، سدا آرزو،
عاشق جيان اشک، پچائي تہ ڏس.

١٠ خوشبوءِ گلاب جي، پاڻ تو چاهين،
ڪنڊن سان ''پدم'' رسائي تہ ڏس.

❖❖❖

मुंहिंजा मन कबूतर

१. चोर चढ़िहनि था चोटि, साध पवनि था पटि,
तूं खणी अखि पटि, मुंहिंजा मन कबूतर!

२. किरत न कारि काऊँ काई, आ पैसे जी रंगत आई,
तूं बि कुझु कर भाई, मुंहिंजा मन कबूतर!

३. सौदा कनि था अजु सियाणा, इन्साफ भी आहिनि विकाणा,
कृपा से तूं विहाणा, मुंहिंजा मन कबूतर!

४. वकीलनि वदा कया वड़, ढाकुनि खूनियुनि खंया कर;
हंज में लिकाए पंहिंजी हड़,मुंहिंजा मन कबूतर!

५. रिश्वत जो अजु ज़ोरु आ, हर मन मंझि हिकु चोर आ,
तो कयो छो गोढ़ आ? मुंहिंजा मन कबूतर!

६. महिनत मिठी कीन लगे थी, शराफत सुठी कीन लगे थी;
दिसी दिलिड़ी कीन सघे थी, मुंहिंजा मन कबूतर!

७. वाघुनि जा मूं गोड़हा दिठा, पंहिंजनि जा हिंया सोढ़हा दिठा,
वारनि मंझि ठोढ़हा दिठा, मुंहिंजा मन कबूतर!

८. दिठमि पैंच पंहिंजा थींदा, ज़ोरावार लाइ तुंहिंजा थींदा,
लाचारनि लाइ अहिंजा थींदा, मुंहिंजा मन कबूतर!

९. मासूम मुखड़ी विकामे थी, घर छदींदें उजहामे थी,
सोचे दिल विसामे थी, मुंहिंजा मन कबूतर!

१० अजु हर शइ जो थियो मूल आ, विकाम्यो जज़्बो ऐं बोल आ,
तुंहिंजी गिचीअ में छो ढोल आ? मुंहिंजा मन कबूतर!

منهنجا من ڪبوتر

١. چور چڙهن ٽا چوٽ، ساڌ پون ٽا پٽ،
تون ڪٽي اَک پٽ، منهنجا من ڪبوتر!

٢. ڪرت نہ ڪار ڪائون ڪائي، آ پئسي جي رنگت آئي،
تون ٻي ڪجهہ ڪر پائي، منهنجا من ڪبوتر!

٣. سودا ڪن ٽا اڄ سياڻا، انصاف ٻي آهن وڪاڻا،
ڪرپا سي تون وهاڻا، منهنجا من ڪبوتر!

٤. وڪيلن وڏا ڪيا وڙ، ڏاڪن خونين ڪنيا ڪر؛
هنج ۾ لڪاءِ پنهنجي هڙ، منهنجا من ڪبوتر!

٥. رشوت جو اڄ زور آ، هر من منجهہ هڪ چور آ؛
تو ڪيو چو گوڙ آ؟ منهنجا من ڪبوتر!

٦. محنت مني ڪين لڳي ٿي، شرافت سني ڪين لڳي ٿي؛
ڏسي دلڙي ڪين سگهي ٿي، منهنجا من ڪبوتر!

٧. واڳهن جا مون ڳوڙها ڏٺا، پنهنجن جا هنيا سوڙها ڏٺا
وارن منجهہ نوڙها ڏٺا، منهنجا من ڪبوتر!

٨. ڏنم پئنچ پنهنجا ٽيبندا، زوراور لاءِ تنهنجا ٽيندا؛
لاچارن لاءِ اَهنجا ٽيندا، منهنجا من ڪبوتر!

٩. معصوم مڪڙي وڪامي ٿي، گهر ڇڏيندين اَجهامي ٿي،
سوچي دل وسامي ٿي، منهنجا من ڪبوتر!

١٠. اَڄ هر شيءِ جو ٽيو مول آ، وڪاميو جذبو ۽ ٻول آ،
تنهنجي ڳچيءَ ۾ چو ڍول آ؟ منهنجا من ڪبوتر!

११. अजु सुवाल मथां आ सुवाल, जवाब जो आ किथे हाल!
सोचे हल तूं हंस जी चाल, मुंहिंजा मन कबूतर!

१२. कुछु तरी मोती पाताल, आ कूड़े जो थियो बोल बाल,
बंदि कर हाणे पंहिंजो तालु, मुंहिंजा मन कबूतर!

१३. हाणे छा तूं सिखंदे यार, पूरी कयइ अची जमार,
उदरी पउ "पदम" पारि, मुंहिंजा मन कबूतर!

❖❖❖

ग़ज़ल

१. अजु सरउ बि त सुठी लगण लगी आ,
खुशबुइ बहार जी फहिलण लगी आ।

२. नज़र जो मिली आ उन जी नज़र सां,
दिलि भी ज़ोर सां धड़कण लगी आ।

३. मिलियो आ नशो मैखाने खां वधीक,
काहिरी खुमारी चढ़हण लगी आ।

४. सदिके वञां वारूं वार मां उन तां,
नज़रूनि अगियां जा फिरण लगी आ।

५. गोल्हे थी नज़र हाण, उन ई नज़र खे,
नज़र ज़माने जी, लगण लगी आ।

६ केदांह "पदम", भला मां हाणे?
सपननि में सुरहाण, अचण लगी आ।

❖❖❖

۱۱. اَڄ سوال مٿان آ سوال، جواب جو آ ڪٿي حال !
سوچي هل تون هنس جي چال، منهنجا من ڪبوترا!

۱۲. ڪچ تري موتي پاتال، آ ڪوڙي جو ٿيو بون بال،
بند ڪر هاڻي پنهنجو تال، منهنجا من ڪبوترا!

۱۳. هاڻي ڇا تون سڪندين يار، پوري ڪيئہ اچي ڇمار،
اُڏري پو ”پدم“ پار، منهنجا من ڪبوتر !

❖❖❖❖❖❖

غزل

۱. اَڄ سرءُ بہ تہ سٺي لڳڻ لڳي آ،
خوشبوءِ بهار جي ڦهلڻ لڳي آ.

۲. نظر جو ملي آ اُن جي نظر سان،
دل ڀي زور سان ڌڙڪڻ لڳي آ.

۳. مليو آ نشو مئخاني کان وڌيڪ،
ڪاهري خمار چڙهڻ لڳي آ.

۴. صدقي وڃان وارون وار مان اُن تان،
نظرن اَڳيان، جا ڦرڻ لڳي آ.

۵. ڳولهي ٿي نظر هاڻ ان ئي نظر کي،
نظر زماني جي لڳڻ لڳي آ.

۶. ڪيڏانهن ”پدم“ پلا مان هاڻي؟
سپنن ۾ سرهاڻ، اچڻ لڳي آ.

❖❖❖

ग़ज़ल

कोई मुंहिंजो प्यार सुञाणे,
सुहिणो पंहिंजो यार सुञाणे।

हरकत हाज़िर हर दिल में आ,
दिलबिर पंहिंजो आर सुञाणे।

मुहब्बत जे मैदान में छाहे?
आशिक थी दिलदार सुञाणे।

सूरत सभिनी खे आ वणंदी,
सीरत को सरदार सुञाणे।

दाढ सां "पदम" प्यार न पातो,
हरको प्यार जो जार सुञाणे।

❖❖❖

ग़ज़ल

छदि न उन्हनि, जिनि, आ छदियो तोखे;
पंहिंजी नफरत सां, आ अदियो तोखे।

खणनि था काठ कुहाड़ा, तुंहिंजे लाइ;
केदे सामान सां, आ गदियो तोखे।

आह वक्तु हित कंहिं खे? किथे ? कंहिं लाइ?
सहु सितमु , उन लाइ, आ सदियो तोखे।

सबरु सां ई त मिलंदइ, सूरत काई;
आज़माइण लाइ, आ फटियो तोखे।

सच पुठियां थो सिर, तूं करीं सदिके;
तदंहि त "पदम", तिनि आ कटियो तोखे।

❖❖❖

غزل

ڪوئي منهنجو پيار سڃاڻي،
سهڻو پنهنجو يار سڃاڻي.

حرڪت حاضر هر دل ۾ آ،
دلبر پنهنجو آر سڃاڻي.

محبت جي مئدان ۾ چاهي؟
عاشق ٿي دلدار سڃاڻي.

صورت سيني کي آ وڻندي،
سيرت کو سردار سڃاڻي.

ڏاڍ سان ”پدم“ پيار نہ پاتو،
هرکو پيار جو چار سڃاڻي.

❖❖❖

غزل

چڙ نہ انهن، جن، آ چڙيو توکي؛
پنهنجي نفرت سان، آ اڏيو توکي.

ڪٽڻ ٿا ڪان کهاڙا، تنهنجي لاءِ؛
ڪيڏي سامان سان، آ گڏيو توکي.

آهہ وقت هت ڪنهن کي؟ ڪٿي؟ ڪنهن لاءِ؟
سَهہ ستم، ان لاءِ، آ سڏيو توکي.

صبر سان ئي تہ ملندءِ، صورت ڪائي؛
آزمائڻ لاءِ، آ ڦٽيو توکي.

سچ پنيان تو سر، تون ڪرين صدقي؛
تڏهن تہ ”پدم“ تن، آ ڪٽيو توکي.

❖❖❖

ग़ज़ल

चोर बणिया अहिनि मोर, त मां छा करियाँ?
पूरी थिये न लोढ़ि, त मां छा करियाँ?
खाइण लाइ कणो, मिली बि वञे थो,
खाइण सां बि दुखे हौढ़, त मां छा करियाँ?
सच्चा सहकी सहकी, वेही साहु पटनि;
कूड़ा पाइनि ढोड़, त मां छा करियाँ?
हद दोखी ऐं दाहा, सदा दिसनि दुखु,
मुफतखोर खाइनि बोड़, त मां छा करियाँ?
विञाइनि पिया वहि, दान न कन दाणो,
दिलि में अथनि सोड़हि, त मां छा करियाँ?
''पदम'' परपचार, सां पूरी थी जमार;
असर न कनि जे फोड़ि, त मां छा करियाँ।

❖❖❖

ग़ज़ल

साज़ दिलि जा , वजण लगा,
राज़ दिलि जा , खुलण लगा।
प्यार जे , कंहिं न दिनो कुझु,
तार दिलि जा, खजण लगा।
साथु कंहिं जो, अगर मिलियो,
खौफ दिलि मां, भजण लगा।
दर्द कंहिं जो, दिसी करे,
छपर अखि जा, भिजण लगा।
रोई वेठो ''पदम' जदहिं,
खिलण वारा, रोइण लगा।

❖❖❖

غزل

چور بٽيا آهن مور، ته مان ڇا ڪريان؟
پوري ٽئين نه لوڙ، ته مان ڇا ڪريان؟

ڪائڻ لاء ڪٽو، ملي ٻه وڃي ٿو؛
ڪائڻ سان ٻه ڏکي هوڙ، ته مان ڇا ڪريان؟

سچا سهڪي، ويهي ساهه پٽن؛
ڪوڙا پائن ڊوڙ، ته مان ڇا ڪريان؟

هڏ ڏوکي ۽ ڏاها، سدا ڏسن ڏک؛
مفتخور ڪائن ٻوڙ، ته مان ڇا ڪريان؟

وڃائن پيا ويھ، دان نه ڪن داڻو؛
دل ۾ اٿن سوڙهه ، ته مان ڇا ڪريان؟

”پدم“ پرپچار، سان پوري ٿي جمار،
اثر نه ڪن جي ڦوڙ، ته مان ڇا ڪريان.

❖❖❖

غزل

ساز دل جا، وڄڻ لڳا،
راز دل جا، کُلڻ لڳا.

پيار جي، ڪنهن ڏنو نه ڪجهه،
تار دل جا، ڪڇڻ لڳا.

سات ڪنهن جو، اگر مليو،
خوف دل مان، ڀڄڻ لڳا.

درد ڪنهن جو، ڏسي ڪري،
چپ اکه جا ڀڄڻ لڳا.

روئي وينو ”پدم“ جڏهن،
ڪلڻ وارا، رئڻ لڳا.

❖❖❖

ग़ज़ल

१. घाव ज़माने जा गहिरा लगी विया;
चहिरनि मथां नवां चहिरा लगी विया।

२. आज़ाद भारत में भला कंहिं आज़ादु साहु खंयो?,
हर कदम ते हिते, पहिरा लगी विया।

३. माणिया वेही कपूतनि, मेवा आज़ादीअ जा,
विसिरयूं कुरबानियूं, नशा अहिड़ा लगी विया।

४. न सरकार साफ, न कानून, न वकील ई रहिया;
सितमगर जे सिर ते सहिरा लगी विया।

५. हल "पदम" हाणे, हितां हलिया हलूं;
कई हिन खां अगु, असां जहिड़ा हली विया।

❖❖❖

ग़ज़ल

महिफल में उन्हनि जी, असां सुहूं कींअं?
कनि था जदहिं सितम से, असां सहूं कींअं?
सितम करण ई आ, सितमगरनि जी फितिरत,
फितरित सां उन्हनि जी, असां ठहूं कींअं ?
हुजनि न लहिरूं पाणीअ में, मज़ो ई कहिड़ो,
विढ़हण बिना उन्हनि सां, असां तरूं कींअं?
नादान आहिनि, तिनि सां, भला ! विढ़हण कहिड़ो;
विढ़हनि था जदहि से, असां टरूं कींअं?
समिझाइण सां बि समिझी, न जेकी समिझनि,
उन्हनि सां "पदम" गदु, असां रहूं कींअं?

❖❖❖

غزل

١. گھاو زماني جا گھرا لڳي ويا؛
چھرن مٿان نوان چھرا لڳي ويا.
٢. آزاد پارت ۾ پلا! ڪنھن آزاد ساھ کنيو؟
ھر قدم تي ھتي، پھرا لڳي ويا.
٣. ماٺيا ويھي ڪپوتن، ميوا آزادي جا،
وسريون قربانيون، نشا اھڙآ لڳي ويا.
۴. نہ سرڪار صاف، نہ قانون،نہ وڪيل ئي رھيا؛
ستمگر جي سر تي سھرا لڳي ويا.
۵. ھل ''پدم'' ھاڻي ھتان ھليا ھلون،
ڪيئي ھن ڪان اڳہ، اسان جھڙا ھلي ويا.

❖❖❖

غزل

محفل ۾ انھن جي، اسان ڇھون ڪيئن؟
ڪن ٿا جڏھن ستم سي، اسان ڇھون ڪيئن؟
ستم ڪرڻ ئي آ، ستمگرن جي فطرت،
فطرت سان اُنھن جي، اسان ٺھون ڪيئن؟
ھجن نہ لھرون پاڻيءَ ۾ مزو ئي ڪھڙو،
وڙھڻ بنا انھن سان، اسان ترون ڪيئن؟
نادان آھن، تن سان پلا ! وڙھڻ ڪھڙو؛
وڙھن ٿا جڏھن سي، اسان ترون ڪيئن؟
سمجھائڻ سان بہ سمجھي، نہ جيڪي سمجھن،
انھن سان ''پدم'' گڏ، اسان رھون ڪيئن؟

❖❖❖

ग़ज़ल

तूं ई बुधाए, राति गुज़रे छो न थी?
तूं ई बुधाए , सुबह उसरे छो न थी?

मुहब्बत में मुंहिंजी, कहिड़ी कमी आ?
नफ़रत भला तुंहिंजी, उजड़े छो न थी?

राहूं मन्ज़िल जूं सुरनि थियूं सभिनी दे,
का राह मूं दे पोइ वरे छो न थी?

सभिनी खे मिले थो, फलु त ''महिनत'' जो,
किस्मत भला मुंहिंजी, उभरे छो न थी?

थियो आ हलाल, हराम ई घणनि खे,
ज़री भला मूंखे, आ फ़रे छो न थी?

केदा पिया थियनि, कांड हिन मुल्क में,
जनता ''पदम'' पोइ पसरे छो न थी?

❖❖❖

[library stamp]

غزل

تون ئي ٻڌاءِ ، رات گذري چو نہ ٿي؟
تون ئي ٻڌاءِ ،. صبح اُسري چو نہ ٿي؟

محبت ۾ منهنجي ڪهڙي ڪمي آ؟
نفرت ڀلا تنهنجي، اُجڙي چو نہ ٿي؟

راهون منزل جون سرن ٿيون سيني ڏي،
ڪا راهہ مون ڏي پوءِ وري چو نہ ٿي؟

سيني ڪي ملي ٿو ، ڦل تہ ”محنت“ جو،
قسمت ڀلا منهنجي، اُيري چو نہ ٿي؟

ٿيو آ حلال، حرام ئي گهٽڻ ڪي،
ڏري ڀلا مونکي، آ ڦري چو نہ ٿي؟

ڪيڏا پيا ٿين، ڪانڌ هن ملڪ ۾؛
جنتا ”پدم“ پوءِ پسري چو نہ ٿي؟

❖❖❖

ग़ज़ल

१. यार मिलियो, न ही, प्यार मिलियो,
प्यार में पिणु वापर मिलियो।

२. अपर्ण कई जंहिं खे जिन्दगी,
नफरत जो वहिंवार मिलियो।

३. उल्फ़त जे ई उमीदुनि में,
कुल्फ़त जो संसार मिलियो।

४. दींहु नओं, अरमान नओं,
जलियो रहियो, न को ग़मखोर मिलियो।

५. शेवा में समाई ब़ंदगी,
उनजो "पदम" खे न अख़्तियार मिलियो।

❖❖❖

ग़ज़ल

१. दीदार करे कंहिंजो दीवानो थी वियुसि,
खिनि पल में ई पाण खां, बेगानो थी वियुसि।

२. अंदाज़ इश्क जो आ, मिली वियो मूंखें;
कंहिं शमा जे लाइ, अजु परवानो थी वियुसि।

३. वहे पियो नीर सदा, अखिड़युनि मां मुंहिंजे;
अशिकनि जो छलकंदड़ि, पैमानो थी वियुसि।

४. लिंव का इश्क जी, अहिड़ी लगी वेई;
जो मस्तीअ में, उन जे मस्तानो थी वियुसि।

५. थींदो छा हाणे भला ! हिन आशिक जो "पदम"?
लोकनि जे लबनि ते ई, अफसानो थी वियुसि।

❖❖❖

غزل

١. يار مليو، نہ ئي، پيار مليو،
پيار ۾ پڻ واپار مليو.

٢. ارپڻ ڪئي جنهن کي زندگي،
نفرت جو وهنوار مليو.

٣. اُلفت جي ئي اُميدن ۾،
ڪلفت جو سنسار مليو.

٤. ڏينهن نئون، ارمان نئون،
جليو رهيو، نہ ڪو غمخور مليو.

٥. شيوا ۾ سمائي بندگي
انجو ”پدم“ کي نہ اختيار مليو.

❖❖❖

غزل

١. ديدار ڪري ڪنهنجو ديوانو ٿي ويس؛
ڪن پل ۾ ئي پاڻ کان، بيگانو ٿي ويس.

٢. اَنداز عشق جو آ، ملي ويو مونکي؛
ڪنهن شمع جي لاءِ، اَڄ، پروانو ٿي ويس.

٣. وهي پيو نير سدا، اَکڙين مان منهنجي؛
اشڪن جو ڇلڪندڙ ، پئمانو ٿي ويس.

٤. لِنو ڪا عشق جي، اَهڙي لڳي وئي؛
جو مستيءَ ۾، اُن جي، مستانو ٿي ويس.

٥. ٿيندو ڇا هاڻي يلا! هن عاشق جو ”پدم“ ؟
لوڪن جي لبن تي ئي، افسانو ٿي ويس.

❖❖❖

ग़ज़ल

१. बहारुनि आ मुंहिंजे , चमन खे बिगाड़ियो;
दियां दोहु कहिड़ो, खिंजा खे ई सारो।

२. केई आया तूफान, केई आयूं आंधियूं;
चमन मुंहिंजे कदहिं बि हिंयो कीन हारियो।

३. दियनि कोन उसरणि, था आशिकनि खे हितड़े,
गिला कहिड़ी गैरनि, आ पंहिंजनि ई मारियो।

४. भला रांदि तिनि जी, वणे कींअं गुलनि खे,
सियासित सां जिनि आ, चमन खे ई साड़ियो।

५. सभा का "पदम" ईंदी जरूर, हिक दींहु,
त दिसिबो आ, मुंहिंजे चमन खे संवारियो।

❖❖❖

ग़ज़ल

निग़ाहुनि सां मारिनि, अदाउनि सां मारिनि,
हीउ थियूं हुसन वारियूं, जटाउनि सां मारिनि।

सहारो वफाउनि जो, आहे असांखे;
दिसो कींअं हू थियूं जफ़ाउनि सां मारिनि।

बेईमानी इश्क में, हितेई दिठीसीं,
सदे थियूं टुवाटनि ते, झाडुनि सां मारिनि।

वफाउनि जूं पुतिलयूं, हिते भी के आहिनि,
जफाऊँ सही थियूं, वफाउनि सां मारिनि।

आ मजनू व रांझे जे खानदान हितिड़े,
मुंझाए "पदम" खे, म्यारुनि सां मारिनि।

❖❖❖

غزل

١. بهارن آ منهنجي، چمن کي بگاڙيو؛
ڏيان ڏوھہ ڪھڙو، خزان کي ئي سارڻ.

٢. ڪيئي آيا طوفان، ڪيئي آيون آنديون،
چمن منهنجي ڪڏهن بہ هنيو ڪين هاريو.

٣. ڏين ڪونہ اُسرڻ، ٿا عاشقن کي هتڙي،
گلا ڪھڙي غيرن، آ پنھنجن ئي ماريو.

۴. پلا راند تن جي، وٺي ڪيئن گلن کي،
سياست سان جن آ، چمن کي ئي ساڙيو.

۵. صباڪا ”پدم“ ايندي ضرو، هڪ ڏينهن،
تہ ڏسبو آ، منهنجي چمن کي سنواريو.

❖❖❖

غزل

نگاهن سان مارن، اَدائن سان مارن؛
هي تيون حُسن واريون، جتائن سان مارن.

سهارو وفائن جو، آهي آسان کي؛
ڏسو ڪيئن هوُ تيون جفائن سان مارن.

بي ايماني عشق ۾، هتيئي ڏِنيسين؛
سَڏي تيون ٿِواٿن تي، جهاڙُن سان مارن.

وَفائن جون پُتليون، هِتي پي کي آهن؛
جفائون سَهي تيون، وفاڻُن سان مارن.

آ مجنون و رانجهي جي خاندان هتڙي،
مُنجهائي ”پدم“ کي، ميارُن سان مارن.

❖❖❖

ग़ज़ल

ठारे सरहद , बाहि जे घर में बारिनि था;
पंहिंजे हथनि सां, पंहिंजे वतन खे साढ़िनि था।

चाढ़हे हंजुनि ते, जिनि बि जवान करियूं था,
से ई हिक दींहु त, दिलि मां धिकारनि था।

हीरा मोती अणमुल्हा, विञाये वक्त जा,
कच जी कनि जे कमाई, जन्म विञाईनि था।

छा रहियो आह, वञी संसार में हाणे;
ताते पाले नींगर, वाघुनि वारनि था।

रखनि पिया वझूद खुशामद जे खड़के सां;
रहबर न थियनि सच जा, कोन निभाईनि था।

पाण विञाए पाण, पिटनि था पाण खे,
हिक दींहु से ई, पंहिंजी पाड़ पटाइनि था।

मूं त कई आ "पदम" अजु गाल्हि जमाने जी;
उन्हनि करे याद, जे परलोक सजाइनि था।

❖❖❖

غزل

ٽاري سرحد، باهه جي گهر ۾ ٻارن ٿا؛
پنهنجي هٿن سان، پنهنجي وطن کي ساڙن ٿا.

چاڙهي هَنجُن تي، جن بہ جوان ڪريون ٿا؛
سي ئي هڪ ڏينهن تہ، دل مان ڏِڪارن ٿا.

هيرا موتي اَڻمُلها، وڃائي وقت جا؛
ڪَچ جي ڪن جي ڪمائي، جنم وڃائن ٿا.

ڇا رهيو آهہ، وڃي سنسار ۾ هاڻي،
تاتي پالي نينگر، واگهن وارن ٿا.

رَڪَن پيا وجوُد، خوشامد جي ڪَڙڪي سان،
رهبر تين نہ سچ جا، ڪونہ نيائن ٿا.

پاڻُ وڃائي پاڻ، پٽن ٿا پاڻ کي،
هڪ ڏينهن سي ئي، پنهنجي پاڙ پٽائن ٿا.

مون تہ ڪئي آ ''پدم''، اَڄ ڳالهہ زماني جي؛
انهن ڪري ياد، جي پرلوڪ سڌائن ٿا.

❖❖❖

बाहि बिरह जी

राति ग़ज़ब जी लड़ी आ,
बाहि बिरह जी बरी आ;
अड़े हिकड़ी घड़ी त हली आ.... राति ग़ज़ब जी लड़ी आ।

सपननि में तूं, सदा अचीं थी;
रांदि रुसण जी, अची रचीं थी;
परचाइ दिलिड़ी थकी आ.... राति ग़ज़ब जी लड़ी आ।

हुसन ऐदो, महांगो पवंदो;
पेचड़ो इश्क जो अणांगो पवंदो;
कंहिं खे कल, हीअ पई आ.... राति ग़ज़ब जी लड़ी आ।
ऋतु सावण जी सिकाए थी;
रोइ रड़ी, बादाइ थी,
दिलिड़ी, दिलि खे लगी आ.... राति ग़ज़ब जी लड़ी आ।
तो त चयो हो, सघो ईंदीअ;
अचण सां "पदम" नींहं वंडींदीअ;
मुंद मिलण जी वरी आ....
राति ग़ज़ब जी लड़ी आ।............

❖❖❖

باهہ برهہ جي

رات غضب جي لڙي آ؛
باهہ برہ جي ٻري آ؛
اَڙي هڪڙي گهڙي ت هلي آ... رات غضب جي لڙي آ.

سپنن ۾ تون، سدا اچين ٿي؛
راند رسڻ جي، اچي رچين ٿي؛
پرچائي دلڙي تڪي آ.... رات غضب جي لڙي آ.
حسن ايڏو، مهانگو پوندو؛
پيچڙو عشق جو اٽانگو پوندو؛
ڪنهن ڪي ڪل، هيءَ پئي آ.... رات غضب جي لڙي آ.
رُتَ ساوڻ جي سِڪائي ٿي؛
روئي رڙي، ٻاڏائي ٿي؛
دلڙي، دل ڪي لڳي آ.... رات غضب جي لڙي آ.
تو تہ چيو هو، سگهو ايندينءَ؛
اَچڻ سان ”پدم“ ، نينهن ونديندينءَ؛
مند ملڻ جي وري آ....
رات غضب جي لڙي آ.

❖❖❖

यादूं

रोई दियनि था के, खिलंदे खिलंदे,
मुरकी विहनि था के, रोअंदें रोअंदें।

यादयुनि जा बि, अजीब मज़ाक दिठा,
बीहजी वञनि था के, हलंदें हलंदे।

भासण लगनि था, तदंहि, संवां बि चढ़िया,
रस्ते ते आङिरियूं गणींदें गणींदे।

चैन न चित में, दींहु हुजे या राति,
जागनि सारी राति, सुम्हंदें सुम्हंदे।

मुंद यादियुनि जा, हिन समुंड खां ऊन्हा,
विसरनि कीन, "पदम", मरंदे मरंदे।

❖❖❖

ग़ज़ल

दर्द खे हवा, दियण वारा रुसी विया,
जिस्म खे जफ़ा, दियण वारा रुसी विया।

टीझिड़ियूं रखी, जिनि लाइ फाका कढयासीं;
बदन खे तसिया , दियण वारा रुसी विया।

हिक घड़ी हुई जिनि सां घारिहण जिन्दगी,
पल ख़ुश नुमा दियण वारा रुसी विया।

जफा हुई जिनि जी, का दवा दर्द लाइ;
खफ़ा थी दवा दियण वारा रुसी विया।

कदम जिनि जा दींदा हा, लर्जिश ख़ुशीअ जी,
"पदम" से शफा दियण वारा रुसी विया ।

❖❖❖

ياديون

روئي ڏين ٿا ڪي، ڪلندي ڪلندي،
مرڪي وهن ٿا ڪي، روئندي روئندي.

يادين جا پيي، عجيب مذاق ڏٺا،
ٻهجي وڃن ٿا ڪي، هلندي هلندي.

ياسڻ لڳن تڏهن، سنوان پيي چريا،
رستي تي آڱريون، ڳڻيندي ڳڻيندي.

چئن نہ چت ۾ ڏينهن هجي يا رات،
جاڳن ساري رات، سمهندي سمهندي.

منڊ يادين جا، هن سمنڊ ڪان اونها،
وسرن ڪين ”پدم“، مرندي مرندي.

❖❖❖

غزل

درد ڪي هوا، ڏيڻ وارا رسي ويا،
جسم ڪي جفا، ڏيڻ وارا رسي ويا.

ٽيجڙيون رکي، جن لاءِ ڦاڪا ڪديا سين؛
بدن ڪي تسيا ، ڏيڻ وارا رسي ويا.

هڪ گهڙي هئي جنسان گهارڻ زندگي،
پل خوش نما ڏيڻ وارا رسي ويا.

جفا هئي جن جي، ڪا دوا درد لاءِ،
خفا ٿي دوا ڏيڻ وارا رسي ويا.

قدم جن جا ڏيندا ها، لرزش خوشيءَ جي،
”پدم“ سي شفا ڏيڻ وارا رسي ويا.

❖❖❖

मछर

मछर आहे, राक्षस खां परे;
पेट में ख़ून, हर हिक जो भरे।

हथ जोड़ियोसि या पेरे पओस,
थींदो न पल भर, थोरो परे

चिबंड़ी चुहिटी चकु पाएथो,
ख़ून चूसेथो, ज़री ज़री।

जाग छदे, कीन निंड छदे;
गीत गाए थो हलान करे।

ख़ून चूसे, जदंहि ख़ीरो थिए;
कीन थो पोइ बि, हीरो सुरे।

चढ़े जो गुस्सो "पदम" ते पोइ,
पकं ई पक यारो मछर मरे।

❖❖❖

ماڇر

مڇر آهي، راڪشس کان پري؛
پيٽ ۾ خون، هر هڪ جو ڀري.

هٿ جوڙيوس يا پيري پئوس،
ٿيندو نہ پل پر، ٿورو پري.

چنبڙي چهٽي چڪ پائيٿو،
خون چوسيٿو، ذري ذري.

جاڳہ ڇڏي، ڪين ننڊ ڇڏي،
گيت ڳائي، ٿو هلان ڪري.

خون چوسي، جڏهن ڪيرو ٿئي،
ڪين ٿو پوءِ بہ، هيرو سري؛

چڙهي جو غصو ”پدم“ تي پوءِ،
پڪ ئي پڪ يارو مڇر مري.

❖❖❖

ग़ज़ल

वरी आशिकनि जूं टोलियूं अची वेयूं,
कपाइण कंधनि जूं ब॒ोलियूं अची वेयूं।
गरम आ बिरह जी बाज़ार चौधार,
छुरियूं तलवारूं किथि गोलियूं अची वेयूं।
कुसजनि कूंधर जिति, मैदान में पिया था,
उते माउरनि, यादि लोलियूंअची वेयूं।
जिते सवली आ सिट, सिर जे दि॒यण जी,
बैंड बाज़नि सां द॒ोलियूं अची वेयूं।
"पदम" हीउ मन्ज़र दि॒सणो ई पवे पियो,
गढ़ियूं केदि॒यूं अजु॒ ओलियूं अची वेयूं।

❖❖❖

ग़ज़ल

अखिड़ियुन ई अखिड़ियुनि में ,निहारींदो रहियो,
दिलि व जान सां प्यार, बु॒हारींदो रहियो।
कल का ई कंहिं खे, कद॒हिं कीन पई,
लुटींदो रहियो या, लुटाईंदो रहियो।
दुनिया चइ भल, धोखेबाज़ु ई हिन खे,
नेणनि सां मुंहिंजे, निभाईंदो रहियो।
रखी पे झुकाहयिम, छपर खणी पंहिंजा,
हिजाब लोकनि जो, सताईंदो रहियो।
वरी जे खणी पिए, छपर खंया मूं,
द॒ोरापा नज़र सां, दि॒यारींदो रहियो।
शर्म खां चहिरो , थींदो वियो लाल,
मयारुन सां "पदम" , हू मारींदो रहियो।

❖❖❖

غزل

وري عاشقن جون تولیون اَچي ويون،
کپائڻ کنڌن جون پوليون اچي ويون.
گَرم آ بره جي بازار چوڌار،
ڇُريون تلوارون کٽ گوليون اچي ويون.
کُسجن کونڌر جت، مئدان ۾ پيا تا،
اتي مائرن، ياد لوليون اچي ويون.
جتي سولي آ ست، سر جي ڏيڻ جي،
بئنڊ باجن سان ڏوليون اچي ويون.
”پدم“ هي منظر ڏسڻو ئي پوي پيو،
گهريون کيڏيون اَڄ اوليون اچي ويون..

❖❖❖

غزل

اکڙين ئي اَکڙين ۾، نهاريندو رهيو،
دلوجان سان پيار، پهاريندو رهيو.
کل کا ئي کنهن کي، کڏهن کين پئي؛
لٽيندو رهيو يا، هوُ لٽائيندو رهيو.
دنيا چئي پل، دوکيباز ئي هن کي،
نيڻن سان منهنجي، نباهيندو رهيو.
رکي پئي جهکايم، چپر کٽي پنهنجا،
حجاب لوکن جو، ستائيندو رهيو.
وري جي کٽي پئي، چپر کنيا مون؛
ڏوراپا نظر سان، ڏياريندو رهيو.
شرم کان چهرو، ٿيندو ويو لال،
ميارن سان ”پدم“، هو، ماريندو رهيو.

❖❖❖

ग़ज़ल

दिलि में उथियल तूफान, कंहिं खे देखारियां?
अल्ला ! हीउ उजिड़ियल अरमान, कंहिं के देखारियां?

केदा मिलिया हा, वाइदा वफा जा,
बेवफाईअ जा निशान, कंहिं खे देखारियां?

पीता हा जाम, कदंहि , जिनि नज़रुनि मां;
तिनि नज़रुनि जा गुमान, कंहिं खे देखारियां?

दिसी न दिसनि, जे समिझी न समिझनि,
अहिड़ा दिलबर नादान! कंहिं खे देखारियां?

जलाई जान आ, जिनि लाइ ''पदम''
से ई दुशमन महान, कंहिं खे देखारियां?

❖❖❖

ग़ज़ल

चाची बि चई , था चूंडी पाईनि;
पोइ भी सभेई था, यारी निभाइनि।

अगु हरको जींअंदो हो, शौहरत लाइ;
अजु पैसे लाइ पिया पाण पटाइनि।

को त हिननि मूर्खनि खां, हींअर पुछे;
छो पिया था मननि में , वीछा वधाइनि।

चाह चङी आ, चङी वाट वठी हलण;
पकड़ी ग़लत राह, पिया पाण मुंझाइनि।

''पदम'' त हाणे, समिझाए थको आ,
मूर्ख ई मूर्खनि सां, पलउ अटिकाइनि।

❖❖❖

غزل

دل ۾ اُٿيل طوفان، ڪنهن کي ڏيکاريان؟
الا! هي اُجڙيل ارمان، ڪنهن کي ڏيکاريان؟
ڪيڏا ملِيا ها، واعدا وفا جا،
بيوفائيءَ جا نشان، ڪنهن کي ڏيکاريان؟
پيتا ها جام، ڪڏهن، جن نظرن مان؛
تن نظرن جا گمان، ڪنهن کي ڏيکاريان؟
ڏسي نہ ڏسن، جي سمجهي نہ سمجهن،
اهڙا دلبر نادان! ڪنهن کي ڏيکاريان؟
جلائي جان آ، جن لاءِ 'پدم'
سي ئي دشمن مهان، ڪنهن کي ڏيکاريان؟

❖❖❖

غزل

چاچي بہ چئي، تا چوندي پائن؛
پوءِ بہ سيبئي تا، ياري نِڀائِن.
اڄ هرڪو جيئندو هو، شُهرت لاءِ؛
اڄ پئسي لاءِ، پيا پاڻ پِٽائِن.
ڪوتہ هنن مورکن کان، هينئر پڇي؛
چو پيا تا مَنِ ۾، ويڇا وَڌائِن.
چاهہ چڱي آ، چڱي واتَ وٺي هلڻ؛
پڪڙي غلط راهہ، پيا پاڻ مُنجهائِن.
''پدم''، تہ هاٺي، سمجهائي ٿڪو آ،
مُورک ئي مُورکن سان، پلئہ اِٽڪائِن.

❖❖❖

ग़ज़ल

ऐ॒दी बेरुखी सुठी न आहे,
अजु॒ ताईं कंहिं जी दि॒ठी न आहे।

जंहिं खां सवाइ जेकर न जियासीं,
विछ ढ़ंदे बि अजु॒, दुखी न आहे।

उल्फ़त जंहिं लाइ, सिकयासीं उम्र भर,
अजु॒ ताई भला छो, चखी न आहे?

साथी बि हींअं को साथु छदे॒ दीं॒दो,
अहिड़ी त आरज़ू, रखी न आहे?

रुसी बि जे परची पवे हाणे,
ऐ॒दी बि त दिलि जी सखी न आहे।

''पदम'' इन लाइ वेठो निहारियां,
दिलि खां परे त जा, रखी न आहे।

❖❖❖

मज़ाकी ग़ज़ल

१. चूंडि जे मोर बि अजु॒ चोर थी विया,
चोरियूं करे चोर, शहज़ोर थी विया।

२. मुफ्त जा माल खपनि, मूं घणा नथा,
अरबें ऐं करोड़े खोड़ थी विया।

३. दारूं आम दुकाननि ते जो मिलियो,
घर घर में शराबीयुनि जा शोर थी विया।

४. ऐ॒दो त भाउरनि में साडु॒ मूं दि॒ठो,
जो पाण में नाग ऐं नोड़ थी विया।

५. केदे॒ सिक सां खारायो पिए ''पदम''
चांवर दाल, पुलाउ बो॒ड़ थी विया।

❖❖❖

غزل

ايڏي بي رخي سٺي نہ آهي،
اڄ تاءِ ڪنهن جي ڏٺي نہ آهي.
جنهن کان سواءِ جيڪر نہ جياسين،
وڇڙندي بہ اَڄ، ڏُکي نہ آهي.
اُلفت جنهن لاءِ، سکياسين عمر ڀر،
اڄ تاءِ پلا چو، چکي نہ آهي؟
ساٿي بہ هينئن کو سات ڇڏي ڏيندو،
اهڙي تہ آرزو، رکي نہ آهي؟
رُسي بہ جي پرچي پوي هاڻي،
ايڏي بہ تہ دل جي سَخي نہ آهي.
”پدم“ ان لاءِ وينو نهاريان،
دل کان پري تہ جا، رکي نہ آهي.

❖❖❖

مذاقي غزل

۱. چونڊ جي مور بہ اڄ چور ٿي ويا،
چوريون ڪري چور، شهزور ٿي ويا.
۲. مفت جا مال ڪپن، مون گهٽا نٽا،
اربين ۽ ڪروڙين ڪوڙ ٿي ويا.
۳. دارون عام دڪانن تي جو مليو،
گهر گهر ۾ شرابين جا شور ٿي ويا.
۴. ايڏو تہ پائرن ۾ ساڙ مون ڏٺو،
جو پاڻ ۾ نانگ ۽ نوڙ ٿي ويا.
۵. ڪيڏي سڪ سان ڪارايو پي ”پدم“،
چانور دال، پلاءُ ڀوڙ ٿي ويا.

❖❖❖

ग़ज़ल

१. जीउ जलाइनि त बि जीअ सां जुड़ियल रहनि था,
ही गुलाब ई कंडनि में, सदा टिड़ियल रहनि था।

२. बादल छा भाकुर में, सितारा लिकाईंदा?
ही सितारा त सदा सागिया, खिड़ियल रहनि था।

३. नेकीअ जा पुतला, कदहिं बि बदि थी न सघंदा?
हीरा अकसर सोन में, जड़ियल रहनि था।

४. अचु त छदियूं ज़िद खे पंहिंजे, अजु खां ई सहीं,
कदंहि अकुल वारा किथे न अड़ियल रहनि था?

५. शैतान बणिजण जी , कदंहि बि, कोशिश न कजाएं
चढ़हनि केदो ई, सदा हू किरियल रहनि था।

६. ताड़ी हिक हथ सां न वजे, हथु पंहिंजो रोकु,
सबुर जे शमशेर सां, कीना फटियलि रहनि था

७. वहण दे अखिड़युनि मां, अजु अशिकनि खे , तूं ''पदम'',
अकसर अखिड़युनि में ई , इहे, भरियल रहनि था।

❖❖❖

غزل

۱. جيءُ جلائين تہ بہ جيءَ سان جڙيل رهن ٿا،
هي گلاب ئي ڪندن ۾، سدا ٽڙيل رهن ٿا.

۲. بادل ڇا ڍاڪر ۾، ستارا لڪائيندا؟
هي ستارا تہ سدا ساڳيا، ڪڙيل رهن ٿا.

۳. نيڪيءَ جا پتلا، ڪڏهن بہ بد ٿي نہ سگهندا؛
هيرا اَڪثر سون ۾ ، جَڙيل رهن ٿا.

۴. اَڇ تہ ڇڏيون، ضد ڪي پنهنجي، اَڄ ڪان ئي سهين،
ڪڏهن عقل وارا ڪٿي نہ اَڙيل رهن ٿا؟

۵. شيطان ٻڄڻ جي، ڪڏهن بہ، ڪوشش نہ ڪجانءِ،
چڙهن، ڪيڏو ئي، سدا هو ڪريل رهن ٿا.

۶. تاڙي هڪ هٿ سان نہ وڄي، هٿ پنهنجو روڪ،
صبر جي شمشير سان ڪينا قتيل رهن ٿا.

۷. وهڻ ڏي اَڪڙين مان، اڄ اشڪن کي تون"پدم"،
اَڪثر اَکڙين ۾ ئي اِهي، پڙيل رهن ٿا.

❖❖❖

ग़ज़ल

१. को त बिलो, मुंहिंजो बि कजा;
जदंहि सुर्ग दांहु विख खणिजो।

२. आहे ज़मानो दे वठु जो,
मूं काण बि कुझु देई छदिजो।

३. कींअं भला वापसि, वरिबो;
इन लाइ बि कुझु, बोलाइजो।

४. जे जनम मिले इन्सानी,
भलु थोरो वधीक ई भरिजो।

५. केरु न पुछंदो, सिवाय दियण जे,
सो बि ज़रा सोचे, वठजो।

६. जींअं लुदूं , सोनन पींघहनि में,
उन जो बि कुझु खयाल कझो।

७. हर सिर ते , हिति सिर रखियल आ;
हर सिर खे; पाणी पियारजो।

८. "पदम", बि, पंहिंजो हिस्सो दींदो,
दे वठु में न कंजूस थिजो।

❖❖❖

غزل

١. ڪوٺ بلو، منھنجو بہ ڪجي،
جڏھن سُرڳ ڏانھن وک کڻجو.

٢. آھي زمانو ڏي وَٺُ جو،
مون کان بہ، ڪجھ ڏئي ڇڏجو.

٣. ڪيئن پلا واپس، وَربو؛
اِن لاءِ بہ ڪجھ، ٻولائجو.

۴. جي جنم ملي اِنساني،
پل ٿورو وڏيڪ ئي پَرجو.

۵. ڪير نہ پُڇندو، سواءِ ڏيڻ جي؛
سو بہ ذرا سوچي ونجو.

٦. جئَن لُڏُون، سونن پينگھن ۾،
ان جو بہ، ڪجھ خيال ڪجو.

٧. ھر سِرَ تي، ھِت سِرَ رکيل آ؛
ھر سِرَ کي، پاڻي پيئارجو.

٨. ”پدم“، بہ، پنھنجو حصو ڏيندو،
ڏي وٺ ۾ نہ ڪنجوس ٿِجو.

❖❖❖

हिदायतूं

१. अशिक कंहिंजा मूं उघिया, मुंहिंजा त वहंदा ई रहिया,
कुझु त करे देखारि तूं, वहंदे चवंदा ई रहिया।

२. केरू पंहिंजो, केरु पराओ, सोचीं छो थो तूं ऐदो,
सिजु , चंडु, तारा, सदा सागिया, सभिन लाइ चमकंदा ई रहिया।

३. मुहिकम इरादो गोल्हे राह, मंजिल थींदी कींअं परे,
जे चढ़िया चिर मां निकता, मागु से रसंदा ई रहिया।

४. छा खणी आयो तूं हुएं, छा खणी वेंदें तूं सोच,
कारूं जहिड़ा हाकिम बि, खाली हथें रमंदा ई रहिया।

५. छदि भावना बदिले जी, करे बुरे सां बि भलो,
केरु रहंदो हिति सदा, चढ़िया बि चवंदा ई रहिया।

६. लाही चाढ़ही, गरिबी, अमीरी हिन्दु वरी जा लोदि आ,
सबुर सां जिनि बि सठो, से त लुदंदा ई रहिया।

८. छदि ''पदम'', गाल्हियूं इहे, कर अमल त आमिल चवां,
बाकी त आलमनि जा अबा बि, टंगूं टेड़ींदा ई रहिया।

❖❖❖

هدايتون

١. آشڪ ڪنهنجا مون اُگهيا، منهنجا تہ وهندا ئي رهيا،
ڪجهہ تہ ڪريڏيڪار تون، وهندي چوندا ئي رهيا.

٢. ڪير پنهنجو ، ڪير پرائو، سوچين ڇو تو تون ايڏو،
سج، چنڊ تارا، سدا ساڳيا، سڀن لاءِ چمڪندائي رهيا.

٣. محڪم ارادو ڳولهي راهہ، منزل ٿيندي ڪيئن پري،
جي چريا چر مان نڪتا، ماڳ سي رسندا ئي رهيا.

٤. ڇا کڻي آيو تون هئين، ڇا کڻي ويندين تون سوچ،
قارون جهڙا حاڪم پيءِ، خالي هٿين رمندا ئي رهيا.

٥. ڇڏ پاونا بدلي جي، ڪري بُري سان پيءِ پلو،
ڪير رهندو هت سدا، چريا پيءِ چوندا ئي رهيا.

٦. لاهي چاڙهي، غريبي، اميري هندو وري جي لوڏ آ،
صبر سان جن پيءِ سنو، سي تہ لڏيندا ئي رهيا.

٧. ڇڏ ”پدم“ ڳالهيون اِهي، ڪر عمل تہ عامل چوان،
باقي تہ عالمن جا ابا پيءِ، ٽنگون ٽيڙيندا ئي رهيا.

❖❖❖

ग़ज़ल

१. का मूं में खराबी आहे;
मुंहिंजी अखि ई शराबी आहे।

२. ईअं त नथो किरे, को कंहिं ते,
हिति हरकोई हिसाबी आहे।

३. शबाब पंहिंजो हुजे या ब़ियनि जो,
शबाब त लाजवाबी आहे।

४. वक्त न आहे, कंहिं खे कंहिं लाइ,
जे कशिश आम रवाजी आहे।

५. क़ोई वणी वियो त दिलबर आ,
न त नज़र जी गुस्ताख़ी आहे।

६. रूह न रुले ऐं इश्क़ मिले,
त चइबो इश्क नवाबी आहे।

७. इश्क सचो थो जीवन संवारे,
''पदम''उन लाइ तलाशी आहे।

❖❖❖

غزل

١. ڪا مون ۾ خرابي آهي؛
منهنجي اڪ ئي شرابي آهي.

٢. اِئين تہ نٿو ڪري، ڪو ڪنهن تي،
هت هرڪوئي حسابي آهي.

٣. شباب پنهنجو هجي يا ٻين جو،
شباب تہ لاجوابي آهي.

٤. وقت نہ آهي، ڪنهن کي ڪنهن لاءِ،
جي ڪشش عام رواجي آهي.

٥. ڪوئي وٺي ويو تہ دلبر آ،
نہ تہ نظر جي گستاخي آهي.

٦. روح نہ رِلي ۽ عشق ملي،
تہ ڇئبو عشق نوابي آهي.

٧. عشق سچو تہ جيون سنواري،
”پدم“ ان لاءِ تلاشي آهي.

❖❖❖

सिपही भारत जा

तूफानी रातियुनि में, तूफान जियां वधंदा रहिया,
से सिपाही भारत जा, शोलनि में जलंदा रहिया।

इरादो पाक, चाल पाक, पाक हुई मंज़िल जिनि जी,
पाइण लाइ मंज़िल खे, बर्फुनि में जमंदा रहिया।

न परवाह हथियार जी, सामान जी न जान जी;
जेकी चढ़िहयो हथि बस ! तंहिं सां ई लढ़ंदा रहिया।

पहाड़नि जी चोटियुनि ते, खणी पहाड़नि जा जिगर,
बंदूकुनि ऐं तोबुनि सां गोला वसाईंदा रहिया।

पाक भूमीअ जे पाक, नापाक जरूर थींदो रहियो;
अहिड़े दुश्मन दोस्त खे टोटा चबाईंदा रहिया।

मांइट विसारे, बार विसारे, विसारे सेजा सुखनि जी,
फर्ज़ पंहिंजे खे संभारे, शहीद से थींदा रहिया।

अहिड़नि वीर जवाननि खे ऐं अज़ीज़नि खे उन्हनि जे,
भारत वासियुनि जा सलाम, सवें ई थींदा रहिया।

''पदम'' झुकाए सिर पंहिंजो, थो पेश करे श्रद्धांजली,
जिनि जी शहादत अगियाँ, दुश्मन बि झुकंदा रहिया ।

❖❖❖

سپاهي پارت جا

طوفاني راتين ۾، طوفان جيان وڌندا رهيا،
سي سپاهي پارت جا، شعلن ۾ جلندا رهيا.

ارادو پاڪ، چال پاڪ، پاڪ هئي منزل جن جي،
پائڻ لاءِ منزل کي، برفن ۾ چمندا رهيا.

نہ پرواھہ هٿيار جي، سامان جي نہ جان جي،
جيڪي چڙهيو هٿ، بس ! تنهن سان ئي لڙندا رهيا.

پهاڙن جي چوٽين تي، ڪٽي پهاڙن جا جگر،
بندوقن ۽ توبن سان گولا وسائيندا رهيا.

پاڪ يوميءَ تي پاڪ، ناپاڪ ضرور ٿيندو رهيو؛
اَهڙي دشمن دَوست کي، توتا چبائيندا رهيا.

مائٽ وساري، ٻار وساري وساري سيڄا سکن جي،
فرض پنهنجي کي سنڀاري ، شهيد سي ٿيندا رهيا.

اهڙن وير جوانن کي ۽ عزيزن کي اُنهن جي؛
پارت واسين جا سلام، سوين ئي ٿيندا رهيا.

”پدم“ جهڪائي سر پنهنجو، ٿو پيش ڪري شرڌانجلي،
جن جي شهادت اَڳيان، دشمن پيي جهڪندا رهيا.

❖❖❖

ग़ज़ल

१. रोज़ फिरे थो वक्त असांजो, रोज़ फिरनि थियूं राहूं;
हेदांहं होदांहं चौधर पिया था , फेरियूं पंहिंजूं निगाहूं।

२. केरु थो जाणे सुभां छा थींदो। कंहिंजी पिड़ु आ पौअणो,
कंहिंजी फिरंदी नियत सुभाणे, कंहिंजूं लगदियूं आहूं।

३. काल न कंहिंखे आ छदणि वारो, हिसाब त दियणो पवंदो;
पाप जी माया , प्रायश्चितछाया, वेंदियूं बधिजी बांहूं

४. हालत दिलि जी आहे निराली, रोज़ लहे ख्वाब नवां;
सूर सले कींअं को कंहिं सां, केरु बुधे थो हित दाहूं।

५. छो न थिए कदुर उन्हनि जो, जिति हुजनि अंधनि में काणा;
जाणनि विच से विहनि दिसो पोइ, कींअं निकरनि थियूं हवाऊँ।

६. ''पदम'' ज़मानो आ, उन्हनि जो, जेकी जड़िकनि या भड़कनि,
जो लखु लहे थी लोदि उन्हनि जी, वेठो जाच अदाऊँ।

❖❖❖

ग़ज़ल

१. डिघा सदजनि मूर्ख त, बिंद्रा शैतान,
को त सबबु बणायो आहे भगवान।

२. सुभाउ न कंहिंजे वस में आ, हलत सभ जी पंहिंजी;
वस में कनि सुभाउ, विरले से इन्सान।

३. सोच में अचेन कोन, किथे कींअं कुझु कजे,
मेज़बान थी विहंदा , हूंदा महिमान।

४. अढाई घरनि जो खैर, घुरंदा रहूं था;
वेर न रखूं कंहिं सां, था सदिजूं नादान।

५. विरलो को कंहिं मां, कदंहि खुश रहे थो,
जो ख़ुश थी कुझु करे, त सदिजे महिरबान।

६. ''पदम'' ख़े भगवान, न डिघो कयो न बिंद्रो;
लख खटिजे जे सदिजे, हिकु नेक इन्सान।

❖❖❖

غزل

۱. روز ڦري تو وقت اسانجو، روز ڦرن ٿيون راهون؛
هيڏانهن هوڏانهن چوڌر پيا ٿا، ڦيريون پنهنجون نگاهون
۲. ڪير تو جاڻي سيان چا ٿيندو، ڪنهنجي پڙ آ پوٺو؛
ڪنهنجي ڦرندي نيت سياڻي، ڪنهنجون لڳنديون آهون.
۳. ڪال نہ ڪنهن ڪي، آ چڏڻ وارو، حساب تہ ڏيڻو پوندو؛
پاپ جي مايا، پراشچت چايا، ويندي بڌجي بانهون.
۴. حالت دل جي آهي نرالي، روز لهي خواب نوان؛
سور سلي ڪئن ڪو ڪنهن سان، ڪير بڌي تو هٿ دانهون.
۵. چو نہ ٿئي قدر انهن جو، جت هجن انڌن ۾ ڪاڻا؛
جاڻن وچ سي وهن ڏسو پوءِ، ڪئن نڪرن ٿيون هوائون.
٦. ”پدم“ زمانو آ، انهن جو، جيڪي جڙڪن يا پڙڪن؛
جو لڪہ لهي ٿي لوڏ انهن جي، وينو جاچ اڏائون.

❖❖❖

غزل

۱. ڏکها سڏجن مورکہ تہ بندرا شيطان،
ڪوتہ سبب ٻڌايو، آهي ڀڳوان.
۲. سياءُ نہ ڪنهن جي وس ۾ آ، هلت سڀ جي پنهنجي؛
وس ۾ ڪن سياءُ، ورلي سي اِنسان.
۳. سوچ ۾ اچين ڪونہ، ڪٿي ڪيئن ڪجهہ ڪجي،
ميزبان ٿي وهندا، هوندا مهمان.
۴. اڏائي گهرن جو خير، گهرندا رهون ٿا،
وير نہ رکون ڪنهن سان، ٿا سڏجون نادان.
۵. ورلو ڪو ڪنهن مان، ڪڏهن خوش رهيٿو،
جو خوش ٿي ڪجهہ ڪري، تہ سڏجي مهربان.
٦. ”پدم“ ڪي ڀڳوان، نہ ڏکهو ڪيو نہ بندرو،
لڪہ ڪٿي جي سڏجي ، هڪ نيڪ اِنسان.

❖❖❖

ग़ज़ल

१. भला छो , असां खे सताइण न आयो?
जबर ज़ोर सां कुझु, बणाइण न आयो।

२. कदम ते असांजे बि दौलत नचे हां,
मगर खीरु पाणी मिलाइण न आयो।

३. अखियूं ई सभिन जूं, भिॼाए छदि॒यूं हा,
मगर राज़ु दिलि जो ॿुधाइणि न आयो।

४. वॼाए दुहलु , कंहिं मदारीअ वांगुरु,
दिलियुनि खे दुनिया जे, बहिलाइण न आयो।

५. गुलाबनि जी खुशबु त चाहीसी पाइणु,
मगर खार सां कंहिं , निभाइणि न आयो।

६. पसीनो वहाए, पसीनो वहायो,
मगर महिल वारीअ जो ठाहिण न आयो।

७. करे हा मुहब्बत ''पदम'' सां बि कोई,
इशारे सां अखि जे लुभाइणु न आयो।

❖❖❖

غزل

١. پلا چو، آسان کي، ستائڻ نہ آيو؟
زبر زور سان ڪجھہ، بڻائڻ نہ آيو .

٢. قدم تي، آسانجي بہ دولت نچي ها،
مگر ڪير پاڻي، ملائڻ نہ آيو.

٣. اکيون ئي سپن جون، پچائي چڏيون ها،
مگر راز دل جو، پڌائڻ نہ آيو.

۴. وڃائي دهل، ڪنهن مداريءَ وانگر،
دلين کي، دنيا جي بهلائڻ نہ آيو.

۵. گلابن جي خوشبو تہ چاهيسين پائڻ،
مگر خار سان ڪنهن، نڀائڻ نہ آيو.

٦. پسينو وهائي، پسينو وهايو،
مگر محل واريءَ جو ٺاهڻ نہ آيو.

٧. ڪري ها محوبت، ''پدم'' سان بہ ڪوئي،
اِشاري سان اک جي لڀائڻ نہ آيو.

❖❖❖

ग़ज़ल

१. हज़ारनि में हिकड़ा, असां ईत आहियूं,
था खुद खे सभिन जी नजर खां बचायूं।

२. दि̱सी दुख को कंहिंजो, दुखी खुद थियनि था,
करण दूर दुख खे, था विख खे वधायूं।

३. हले लाओ या कांडो, असां सां अगर को,
था दिलि में विहारे, बि उन सां निबाहियूं।

४. घणा ई मुहब्बत, करण हित था चाहिनि,
मुहब्बत छा आहे? अची को समिझायूं।

५. करे भल को कुल्फत, असां खे कंदो छा?
विसारे, ग़ज़ल था, उल्फ़त जा बु̱धायूं।

६. "पदम" खे न पंहिंजी, लग̱ल लोरी आ का,
मिटाए था खुद खे कुझु बि̱यनि खे बणायूं।

❖❖❖

غزل

۱. هزارن ۾ هڪڙا، اسان ئي تہ آهيون؛
تا خود کي سين جي، نظر کي بچايون.

۲. ڏسي ڏک کو کنهن جو، دکي خود ٿيون تا؛
ڪرڻ دور ڏک کي، تا وکہ کي وڌايون.

۳. هلي لائو يا ڪانڊو، اسان سان اگر کو؛
تا دل ۾ وهاري، بہ ان سان نباهيون.

۴. گهٽا ئي محبت، ڪرڻ هت تا چاهن؛
محبت چا آهي؟ اچي کو سمجهايون.

۵. ڪري پل کو ڪلفت، اَسان کي ڪندو چا؟
وساري، غزل تا، اُلفت جا پڙايون.

۶. ”پدم“ کي نہ پنهنجي، لگل لوري آ ڪا؛
مٽائي تا خود کي، ڪجهہ بين کي بڻايون.

❖❖❖

ग़ज़ल

१. उभ में अजु हिक तारो, कुदंदो दिठो,
"अचु त कुदूं गदिजी," ईंअं चवंदो दिठो।

२. कोसो वाउ न लगण दिनो, जंहिंखे,
अजु अग्नीअ में उनखे पचंदो दिठो।

३. टिड़ियलि गुलनि सां, भरियल हीउ पंहिंजो,
पंहिंजनि नज़रुनि सां पिए जलंदो दिठो।

४. जान जानब जी जींअं जलंदी रही,
हुसन बि संदसि तींअं टिड़ंदो दिठो।

५. हूर हुई या नूर, हुई केरु हूअ?
हर दि़लि खे जवाब इहो घुरंदो दिठो।

६. कींअं "पदम" सघंदो सही सदिमो इहो?
हर को छो हिक बिए खां पुछंदो दिठो।

❖❖❖

غزل

١. اُپ ۾ اَڄ هڪ تارو ڪڏندو ڏٺو،
”اَڄ ته ڪڏون گڏجي،“ اِئين چوندو ڏٺو.

٢. ڪوسو واءُ نه لڳڻ ڏنو جنهن کي،
اَڄ اڱڻيءَ ۾ اُن کي پڇندو ڏٺو.

٣. ٽڙيل گلن سان، پريل هي پنهنجو؛
پنهنجن نظرن سان پي جلندو ڏٺو.

٤. جان جانب جي جيئن جلندي رهي،
حسن به سندس تيئن ٽڙندو ڏٺو.

٥. حوُر هئي يا نور، هئي ڪير هوءَ؟
هر دل کي جواب اِهو گهرندو ڏٺو.

٦. ڪيئن ”پدم“ سگهندو سهي صدمو اهو؟
هرڪو چو هڪ بئي ڪان پڇندو ڏٺو.

❖❖❖

ग़ज़ल

१. लुदंदा लमंदा, वसनि वसकारा,
बाहि बदन ते थधा फुहारा।
२. नेण खणी, नीरे दे निहारियूं,
नज़र अचनि , ऊंदहि अंधियारा।
३. साड़ सड़ी विया सभनि जा, गदिजी,
दोस्त - दुश्मन खेड़िया पाड़ा।
४. भाकुर भरे, खेतनि दांहं सुरिया,
खेतनि जा थिया वारा नियारा।
५. मौसम बदली , प्यार वरिया पोइ,
पखियुनि कया, पंहिंजा आरा।
६. नीर दिनी वाह, खुशीं "पदम" खे
थिया जो सावा, पीला सारा।

❖❖❖

ग़ज़ल

१. जे न था दियो खिलण त, पोइ रोअण त दियो,
जे न था दियो जीअण त पोइ मरण त दियो।
२. फुरे फुरे ज़नता खे, कयो था फकीर,
फकीरनि खे कटोरो, झलण त दियो।
३. सही सही जदंहि, कुझु सही न थो सघिजे;
सड़ियल दिल मां पोइ दूहों निकरण त दियो।
४. वाटूं जे मन्ज़िल जूं, वधाए छदियो था,
तेज़ रफ्तार सां कदम, पोइ वधण त दियो।
५. बंवरे खे बाग़नि में, घुमण जे दियो था,
कलीअ खे फख़ुर सां, पोइ टिड़ण त दियो।
६. करे जे नथा, सघो कडहिं कुझु बि 'पदम"
कुर्सीअ खे पंहिंजी, पोई भजण त दियो।

❖❖❖

غزل

١. لڏندا لمندا، وسن وسڪارا،
باهہ بدن تي، ٿڌا ڦوهارا.
٢. نيڻ ڪٽي، نيري ڏي نهاريون،
نظر اَچن، اوندهہ انڌيارا.
٣. ساڙ سڙي ويا سين جا، گڏجي،
دوست دشمن، ڪيڏيا پاڙا.
٤. پاڪر پري، ڪيتن ڏانهن سريا،
ڪيتن جا ٿيا، وارا نيارا.
٥. مؤسم بدلي، پيار وريا پوءِ،
پکين ڪيا، شروع پنهنجا آرا.
٦. نير ڏني واهہ، خوشي ”پدم“ کي،
ٿيا جو ساوا، پيلا سارا.

❖❖❖

غزل

١. جي نٿا ڏيو کلڻ تہ، پوءِ رئڻ تہ ڏيو،
جي نٿا ڏيو جيئڻ، تہ پوءِ مرڻ تہ ڏيو.
٢. ڦري ڦري جنتا کي، ڪيو ٿا فقير،
فقيرن کي ڪٽورو، جهلڻ تہ ڏيو.
٣. سهي سهي جڏهن ڪجهہ، سهي نٿو سگهجي؛
سريل دل مان دونهون، پوءِ نڪرڻ تہ ڏيو.
٤. واٽون جي منزل جون، وڏائي ڇڏيو ٿا،
تيز رفتار سان قدم، پوءِ وڌڻ تہ ڏيو.
٥. پنوري کي باغن ۾، گهمڻ جي ڏيو ٿا،
ڪليءَ کي فخر سان، پوءِ ٽڙڻ تہ ڏيو.
٦. ڪري جي نٿا ، سگهو ڪڏهن ڪجهہ پي ”پدم“
ڪرسيءَ کي پنهنجي، پوءِ پڇڻ تہ ڏيو.

ग़ज़ल

कंहिं सां कंहिं सां तोड़ निभायां,
किथे कीन थो छोड़ मां भांयां।
छोहु नदीअ जो खत्म न थो थिए,
पियो थो किनारनि सां लहिरायां।
कष्टनि कशालनि ते हिरयो आहियां।
सही सही पियो रूह रीझायां।
पांधीअड़ो थी हलंदो रहां,
मंज़िल कीन पेरनि में पायां।
दिलि सदा चाहींदी रहे थी।
दुशमन खे पिणु पेज़ु रसायां।
दिल ''पदम'' जी आहे निराली,
प्यार बि दिल सां पियो विरहायां।

❖❖❖

ग़ज़ल

१. गले ज़ोर सां मिलंदा आहिनि,
पुठीअ में छुरो हणंदा आहिनि।
२. रखी चमक, चहरे ते पंहिंजी,
अंदर कारो ई, रखंदा आहिनि।
३. डिठम केई दिलदार जग में,
वठी दिल, न दिलि डींदा आहिनि।
४. किथे सिर डियणो, आहे कंहिं लाइ,
वफादार न न, न कंदा आहिनि।
५. छडे सुख घरनि जा, ससुई ऐं संदा;
पुनहल लाइ, पंध, पवंदा आहिनि।
६. ग़ज़ल लाइ इज्ज़त, जिनि खे ''पदम'' आ
उहे वज़न सां लिखंदा आहिनि।

❖❖❖

غزل

ڪنهن سان ڪنهن سان توڙ نڀايان،
ڪٿي ڪين تو ڇوڙ مان پانيان.
ڇوهہ نديءَ جو ختم نٿو ٿئي،
پيو ٿو ڪنارن سان لهرايان.
ڪشت ڪشالن تي هريو آهيان،
سهي سهي پيو روح ريجهايان.
پانديئڙو تي هلندو رهان،
منزل ڪين پيرن ۾ پايان.
دل سدا چاهيندي رهي ٿي،
دشمن کي پڻ فيض رسايان.
دل ”پدم“ جي آهي نرالي،
پيار بہ دل سان پيو ورهايان.

❖❖❖

غزل

١. گلي زور سان، ملندا آهن،
پنيءَ ۾ چرو، هٽندا آهن.

٢. رکي چمڪ، ڇهري تي پنهنجي،
اندر ڪارو ئي، رکندا آهن.

٣. ڏنم ڪيئي، دلدار جڳہ ۾،
وٺي دل، نہ دل ڏيندا آهن.

٤. ڪٿي سر ڏيٺو، آهي ڪنهن لاءِ،
وفادار نہ نہ، ڪندا آهن.

٥. ڇڏي سک گهرن جا، سُئيءَ سندا؛
پنهل لاءِ، پنڌ، پوندا آهن.

٦. غزل لاءِ عزت، جن کي ”پدم“ آ؛
اهي وزن سان لکندا آهن.

❖❖❖

ग़ज़ल

१. भलि को पुटु पियो पीउ सां विढ़हे,
पीउ पियो सदाईं प्यार करे।

२. कुल्हे चढ़ण लाइ कुल्हा गुसाए,
उम्मीदुनि जो अंभार धरे।

३. केदो पीउ जो प्यार निरालो,
बुचाकारनि सां भाकुर में भरे।

४. ओदो ई पीउ ईंदो रहंदो,
भलु खणी पुटु थिए परे परे।

५. धण छो न हुजेस, धीउरनि जो,
त बि मंदिर मस्जिद पियो पुटु घुरे।

६. राह निराली आ धीउ पुट जी
पोइ छो न "पदम" पुट लाइ सुरे।

❖❖❖

ग़ज़ल

रूसवाई कंहिंजी , मंजूर न आ,
दिलि मुंहिंजी ऐदी मग़रूर न आ।

बदिलो आहे घरु , हैवानियत जो,
मंजूर उहो मूं, दस्तोर न आ।

को गुलाब छिने ऐं खार बि न दिसे.
अहिड़ो बि त कोई, बे नूर न आ।

कंहिं खे रोअंदो दिसी, को अखि न उघे,
ऐदो बि त कोई मजबूर न आ।

जेरे काण "पदम" थो बकरी कुहे;
दिलि छो सितमगर, जी थी चूर न आ।

❖❖❖

غزل

۱. پل کو پُٽ پيو پيءُ سان وڙهي،
پيءُ پيو سدائين پيار ڪري.
۲. ڪلهي چڙهڻ لاءِ ڪلها ڳسائي،
اُميدن جو ڪو انبار ڍري.
۳. ڪيڏو پيءُ جو پيار نرالو،
ٻچڪارن سان پاڪر ۾ ڀري.
۴. اوڏو ئي پيءُ ايندو رهندو،
پل ڪٽي کو پٽ ٽئي پري پري.
۵. ڏڻ چو نہ هجيس، ڏيئرن جو،
تہ بہ مندر مسجد پيو پٽ گهري.
۶. راهہ نرالي آ ڏيءَ پٽ جي،
پوءِ چو نہ "پدم"، بہ پٽ لاءِ سري.

❖❖❖

غزل

رُسوائي ڪنهن جي، منظوُر نہ آ؛
دل ايڏي منهنجي مغرور نہ آ.
بدلو آهي گهرُ، حيوانيت جو،
منظور اُهو مون، دستور نہ آ.
ڪو گلاب چني ءِ خار بہ نہ ڏسي،
اهڙو بہ تہ ڪوئي، بي نوُر نہ آ.
ڪنهن کي رئندو ڏسي، ڪو اک نہ اُگهي،
ايڏو بہ تہ ڪوئي مجبور نہ آ.
جيري ڪاڻ "پدم" تو ٻکري کُهي؛
دل چو سِتمگر، جي تي چوُر نہ آ.

❖❖❖

साथी

मूंखे त यार जो बस प्यार ई खपे,
जो देई सघे, इन जो इकरार ई खपे।

मन में आहे लालच, न काई तमना,
दिल में रहे सदा , दिलदार ई खपे।

कदहिं रूसे मूंसां, कदहिं हू परचे,
कुरबान वञां उन तां मनठार ई खपे।

नखरो लगे प्यारो, उन जी अदा लगे प्यारी,
रक्षा करे सघे, जिगरदार ई खपे।

दुख सुख जो थिए साथी, कष्टनि में रहनुमा,
सबाझो सुभाअ जो, सरदार ई खपे।

मां हिन जो सोचां, हू मुंहिंज़ो ई सोचे,
बस रोज को अहिड़ो, तकरार ई खपे।

इश्क जंहिंजो मूंखें मांदो करे छदे,
अहिड़ो को आशिक वफादार ई खपे।

नाज़ुक आहे दिलि असांजी ''पदम''
टोड़े न दिलि खे जो, खबरदार ई खपे।

❖❖❖

ساٿي

مونکي تہ يار جو بس پيار ئي کپي.
جو ڏئي سگهي، ان جو اقرار ئي کپي.

من ۾ آهي لالچ، نہ ڪائي تمنا،
دل ۾ رهي سدا، دلدار ئي کپي.

ڪڏهن رسي مونسان ۽ ڪڏهن هوءُ پرچي،
قربان وڃان اُن تان مننار ئي کپي.

نخرو لڳي پيارو، اُن جي ادا لڳي پياري،
رکشا ڪري سگهي، جگردار ئي کپي.

دک سک جو تئي ساٿي، ڪشتن ۾ رهنما،
سڀاڄهو سپاءُ جو، سردار ئي کپي.

مان هن جو سوچان، هو منهنجو ئي سوچي،
بس روز ڪو اَهڙو، تقرار ئي کپي.

عشق جنهنجو مونکي ماندو ڪري ڇڏي،
اهڙو ڪو عاشق وفادار ئي کپي.

نازڪ آهي دل اسانجي ''پدم''
ٽوڙي نہ دل ڪي جو، خبردار ئي کپي.

❖❖❖

रिश्वत

रिश्वत वधी मुल्क में, रवायत थी वेई,
रिश्वत खिलाफु गुम, हर शिकायत थी वेई।

पकिड़यो सो चोर आ, न त, त हर को शहज़ोर आ;
माल्कि जी शहज़ोरीअ ते, इनायत थी वेई।

चरखो नथो चुरे, कुझु बि दि॒यण खां सवाइ;
जिनि बि न कई, उन्हनि सां अदावत थी वेई।

न रसोख कमु अचे थो, न सिफारिश कमु आई,
रिश्वत वधी, मुल्क में, लियाकत थी वेई।

लाचार दे॒ थो जेको "पदम" गुन्हगार आहे;
वठंदड़ करे थो मौजूं, कयामत थी वेई।

❖❖❖

शहीदिन जी याद

पंवनि था याद अजु॒ उहे, परवाना आज़ादीअ जा;
समिझो जिनि जेलनि खे हो, मैखाना आज़ादीअ जा।

मिलायूं जिनि निगाहूं, फासीअ जे फंदनि सां,
चढ़ी विया चोटि से ई, दीवाना आज़ादीअ जा।

मिलियो नसीब वारनि खे ई, बुखार आज़ादीअ जो,
घुरी दवा, न ई दुआ, हा , मस्ताना आज़ादीअ जा।

चवंदा विया, से देस तां, कुरबान थींदें थींदें,
सदा संभाले रखिजो, हीउ नज़राना आज़ादीअ जा।

शहीदी तिन जी अदीबनि खां, विसरंदी कींअ भला,
कंदा रहंदा कालम कारा, अफ़सना आज़ादीअ जा।

"पदम"उन्हनि जी बदौलत , आज़ादी नसीब थी,
सदा पियूं पिया छलकंदड़, पैमाना आज़ादीअ जा।

❖❖❖

رشوت

رشوت وَڏي ملڪ ۾، روايت تي ويئي،
رشوت خِلاف گمُ، هر شڪايت تي ويئي.
پڪڙيو سو چور آ، نہ تہ، تہ، هر ڪو شهزور آ؛
مالڪ جي شهزورتي، عنايت تي ويئي.
چرخو نٿو چري، ڪجهہ بہ ڏيڻ کان سواءِ،
جن بہ نہ ڪئي، اُنهن سان، عداوت تي ويئي.
نہ رسوخ ڪم اَچي ٿو، نہ سفارش ڪم آئي،
رشوت وَڏِي ملڪ ۾، لياقت تي ويئي.
لاچار ڏيٺو جيڪو، ”پدم“ گنهگار آهي؛
وننڊڙ ڪري ٿو موجون، قيامت تي ويئي.

❖❖❖

شهيدن جي ياد

پون ٿا ياد اَڄ اُهي، پروانا آزاديءَ جا؛
سمجهو جن جيلن کي هو، مئخانا آزاديءَ جا.

ملايون جن نگاهون، ڦاسيءَ جي فندن سان؛
چڙهي ويا چوٽ سيئي، ديوانا آزاديءَ جا.

مليو نصيب وارن کي ئي، بخار آزاديءَ جو؛
گهري دوا، نہ ئي دعا، ها، مستانا آزاديءَ جا.

ڇوندا ويا، سي ديس تان، قربان ٿيندي ٿيندي؛
سدا سنڀالي رکجو، هي نظرانا آزاديءَ جا.

شهيدي تن جي اديبن کان، وسرندي ڪيئن پلا؛
ڪندا رهندا ڪالم ڪارا، افسانا آزاديءَ جا.

”پدم“ اُنهن جي بدولت، آزادي نصيب ٿي؛
سدا پيئون پيا ڇلڪندڙ، پيمانا آزاديءَ جا.

❖❖❖

1024